कक्षा नौवीं

हिंदी

पाठ्यक्रम

शैक्षणिक स्तर : 2025-26

भाग	विषय वस्तु
भाग-क	अति लघूत्तर प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) (i) भाषा-लिपि तथा व्यावहारिक व्याकरण : भाषा, लिपि, वर्ण-विच्छेद, वर्तनी (शब्द-शुद्धि)तत्सम-तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग, वचन, विराम-चिह्न (ii) पाठ्य-पुस्तक (हिंदी पुस्तक 9) में कविता, कहानी, निबन्ध एवं एकांकी के अभ्यासों के भाग-'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग '1' में दिए गए प्रश्न।
भाग-ख	(भाषा-लिपि तथा व्यावहारिक व्याकरण)उपर्युक्त भाग-क (i) में लिखित सभी विषय।
भाग-ग	पाठ्य-पुस्तक (हिंदी पुस्तक 9) (i) पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या (ii) लघूत्तर प्रश्न (केवल गद्य भाग) (iii) निबन्धात्मक प्रश्न (केवल गद्य भाग)
भाग-घ	रचनात्मक लेखन (i) पत्र (अनौपचारिक पत्र) (i) अनुच्छेद लेखन
भाग-ड.	अपठित गद्यांश
भाग-च	मुहावरे
भाग-छ	लोकोक्तियाँ
भाग-ज	अनुवाद (पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्य पुस्तकें

1. हिंदी-पुस्तक-9
2. हिंदी व्याकरण और मानक रचना विधि (नौवीं श्रेणी के लिए)

पाठ - 1 कबीर दोहावली

विषय - बोध

प्रश्न 1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:**

(i) **कबीर के अनुसार ईश्वर किसके हृदय में वास करता है**?

उत्तर-कबीर जी के अनुसार ईश्वर सच्चे व्यक्ति के हृदय में वास करता है।

(ii) **कबीर ने सच्चा साधु किसे कहा है**?

उत्तर-कबीर जी ने सच्चा साधु उसे कहा है जो भाव का भूखा होता है, जिसे धन-दौलत का लालच नहीं होता।

(iii) **संतों के स्वभाव के बारे में कबीर ने क्या कहा है**?

उत्तर- कबीर जी कहते हैं कि संत अपनी सज्जनता कभी नहीं छोड़ते चाहे वे कितने भी बुरे स्वभाव के व्यक्तियों से मिलते रहें। चाहे संत को बुरे लोगों के साथ रहना भी पड़े, उन पर बुराई का प्रभाव नहीं होता।

(iv) **कबीर ने वास्तविक रूप से पंडित/विद्वान किसे कहा है**?

उत्तर-कबीर जी के अनुसार जिस व्यक्ति ने स्वयं को ईश्वर के प्रति अर्पित कर के प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ लिए हैं वही वास्तविक रूप से पंडित/विद्वान् है।

(v) **धीरज का संदेश देते हुए कबीर ने क्या कहा है** ?

उत्तर-कबीर जी ने कहा है कि सभी काम धीरज धारण करने से होते हैं, इसलिए मनुष्य को अपने जीवन में धीरज रखना चाहिए, जिस प्रकार अनुकूल ऋतु आने पर वृक्ष पर फल अपने आप आ जाते हैं उसी प्रकार मनुष्य के सभी कार्य भी सही समय आने पर हो जाते हैं।

(vi) **कबीर ने सांसारिक व्यक्ति की तुलना पक्षी से क्यों की है**?

उत्तर-कबीर जी ने सांसारिक व्यक्ति की तुलना पक्षी से की है क्योंकि जैसे पक्षी आसमान में इधर-उधर उड़ता रहता है वैसे ही मानव का चंचल मन भी कभी स्थिर नहीं रहता।

(vii) **कबीर ने समय के सदुपयोग पर क्या संदेश दिया है**?

उत्तर- कबीर जी ने समझाया है कि मनुष्य को अपना काम कल पर नहीं टालना चाहिए अपितु तुरंत कर लेना चाहिए क्योंकि कल का पता नहीं होता, भविष्य तो सदा अनिश्चित होता है।

भाषा - बोध

वर्ण - विच्छेद

बराबर - ब्+ अ + र्+ आ+ ब्+ अ + र् + अ

भोजन - भ्+ ओ+ ज्+ अ+ न्+ अ

पंडित - प् + अं+ ड्+ इ+ त्+ अ

म्यान - म्+ य् + आ +न्+ अ

बरसना - ब्+ अ + र्+अ+ स्+ अ+न्+ आ

पाठ - 2 सूरदास के पद

अभ्यास (क) - विषय-बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक दो पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न 1: **यशोदा श्री कृष्ण को किस प्रकार सुला रही है**?

उत्तर: यशोदा श्री कृष्ण को पालने में झूला झुलाते हुए, दुलारते हुए, पुकारते हुए तथा कुछ गाते हुए सुला रही है।

प्रश्न 2: **यशोदा श्री कृष्ण को दूर क्यों नहीं खेलने जाने देती है** ?

उत्तर : यशोदा श्री कृष्ण को दूर खेलने इसलिए नहीं जाने देती क्योंकि उसे डर है कि कहीं किसी की गाय उन्हें मार न दे।

प्रश्न 3: **यशोदा श्री कृष्ण को दूध पीने के लिए क्या प्रलोभन देती है**?

उत्तर : यशोदा श्री कृष्ण को कहती है कि यदि वह दूध पी लेंगे तो उनकी चोटी भी बलराम की चोटी के समान लंबी मोटी हो जाएगी ।

प्रश्न 4: **श्री कृष्ण यशोदा से क्या खाने की माँग करते हैं** ?

उत्तरः श्री कृष्ण यशोदा से खाने के लिए माखन रोटी की माँग करते हैं ।

प्रश्न - 5 **अंतिम पद में श्रीकृष्ण अपनी माँ से क्या हठ कर रहे हैं**?

उत्तरः अंतिम पद में श्री कृष्ण अपनी माँ से गाय चराने जाने की हठ कर रहे हैं। वे अपने हाथों से फल तोड़कर खाना चाहते हैं।

(ख) भाषा-बोध

1: नीचे दिए गए सूरदास के पदों में प्रयुक्त ब्रज भाषा के शब्दों के लिए खड़ी बोली हिंदी के शब्द लिखिए:

ब्रजभाषा के शब्द	खड़ी बोली के शब्द	ब्रजभाषा के शब्द	खड़ी बोली के शब्द
कछु	कुछ	निंदरिया	नींद
तोको	तुमको	कान्ह	कन्हैया
कबहुँ	कभी	इहिं	यहाँ
किति	कितनी	भुई	भूमि

निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पलक	पलकें	गोपी	गोपियाँ
नागिन	नागिनें	चोटी	चोटियाँ
ग्वाला	ग्वाले	रोटी	रोटियाँ

पाठ – 3 कर्मवीर (अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध')

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए---

i) जीवन में बाधाओं को देखकर वीर पुरुष क्या करते हैं?

उत्तर - जीवन में बाधाओं को देखकर वीर पुरुष कभी भी घबराते नहीं हैं। वे कठिन से कठिन काम भी कर लेते हैं।

ii) कठिन से कठिन काम के प्रति कर्मवीर व्यक्ति का दृष्टिकोण कैसा होता है?

उत्तर - कठिन से कठिन काम से कर्मवीर व्यक्ति कभी भी तंग नहीं होते हैं।

iii) सच्चे कर्मवीर व्यक्ति समय का सदुपयोग किस प्रकार करते हैं?

उत्तर- सच्चे कर्मवीर व्यक्ति आज का काम आज ही करके समय का सदुपयोग करते हैं और वे व्यर्थ की बातों में अपना समय नहीं गँवाते हैं।

iv) मुश्किल काम करके वे दूसरों के लिए क्या बन जाते हैं?

उत्तर- मुश्किल काम करके कर्मवीर व्यक्ति दूसरों के लिए आदर्श बन जाते हैं।

v) कवि ने कर्मवीर व्यक्ति के कौन-कौन से गुण इस कविता में बताए हैं?

उत्तर-कवि ने कर्मवीर व्यक्ति के परिश्रमी, निडर, समय का सदुपयोग करने वाला, कठिन से कठिन स्थिति का सामना करने वाला तथा अपनी सहायता स्वयं करने वाला जैसे गुण बताए हैं।

(ख) भाषा-बोध

1. 'क' (संस्कृत भाषा के शब्द)	**'ख' (हिंदी भाषा के शब्द)**
कर्म	**काम**
मुख	**मुँह**

उपर्युक्त 'क' भाग में 'कर्म' और 'मुख' शब्द संस्कृत भाषा के शब्द हैं। इनका हिंदी भाषा में भी ज्यों का त्यों प्रयोग होता है। इन शब्दों को 'तत्सम' शब्द कहते हैं। तत्+सम अर्थात् तत्सम इसके समान। 'इसके समान' से अभिप्राय है - 'स्त्रोत भाषा के समान'। हिंदी की 'स्त्रोत भाषा' संस्कृत है, अतः **जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी में ज्यों के त्यों अर्थात् बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए हैं उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते हैं।** जैसे : कर्म, मुख।

उपर्युक्त 'ख'भाग में 'कर्म' के लिए 'काम' व 'मुख' के लिए 'मुँह' शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द (काम, मुँह) संस्कृत से हिंदी में कुछ परिवर्तन के साथ आए हैं। इन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। तद् + भव अर्थात 'उससे होने वाले'। 'उससे होने वाले' से अभिप्राय है - संस्कृत भाषा से विकसित होने वाले। अतः **वे संस्कृत शब्द जो हिंदी में कुछ परिवर्तन के साथ आते हैं- उन्हें 'तद्भव' शब्द कहते हैं।** जैसे- काम, मुँह।

1.पाठ में आए निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

तद्भव - तत्सम	तद्भव - तत्सम
भाग - अंश	पहर - प्रहर
आठ - अष्ट	आग - अग्नि

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए -

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
1) एक ही आन में	(तुरंत, शीघ्र ही)	कर्मवीर लोगों के एक ही आन में बुरे दिन भले बन जाते हैं।
2) फूलना फलना	(संपन्न होना)	कर्मवीर लोगों का प्रत्येक कार्य खूब फलता फूलता है।
3) मुँह ताकना	(दूसरों पर निर्भर रहना)	कर्मवीर व्यक्ति कभी भी किसी काम के लिए दूसरों का मुँह नहीं ताकते।
4) बातें बनाना	(गप्पें मारना)	कर्मवीर व्यक्ति बातें बनाने में अपना समय नहीं गँवाते।
5) जी चुराना	(काम से बचना)	हमें कभी भी काम से जी नहीं चुराना चाहिए।
6) नमूना बनना	(आदर्श/ उदाहरण बनना)	कर्मवीर व्यक्ति स्वयं काम करके दूसरों के लिए नमूना बन जाते हैं।
7) कलेजा काँपना	(भय से विचलित होना, दिल दहल जाना)	कर्मवीर लोगों का किसी भी कठिन कार्य को देख कर कलेजा नहीं काँपता।

पाठ – 4 झाँसी की रानी की समाधि पर

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-

1. समाधि में छिपी राख की ढेरी किसकी है?
उत्तर - समाधि में छिपी राख की ढेरी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की है।
2. किस महान लक्ष्य के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने अपना बलिदान दिया?
उत्तर - भारत को अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए लक्ष्मीबाई ने अपना बलिदान दिया।
3. रानी लक्ष्मीबाई को कवयित्री ने 'मरदानी' क्यों कहा है?
उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई को कवयित्री ने 'मरदानी' इसलिए कहा है क्योंकि वह अंग्रेजों के साथ युद्ध में मर्दों की तरह लड़ी थी।
4. रण में वीरगति को प्राप्त होने से वीर का क्या बढ़ जाता है?
उत्तर- रण में वीरगति को प्राप्त होने से वीर का मान बढ़ जाता है।
5. कवयित्री को रानी से भी अधिक रानी की समाधि क्यों प्रिय है?
उत्तर- कवयित्री को रानी से भी अधिक रानी की समाधि इसलिए प्रिय है क्योंकि इससे आने वाली पीढ़ियों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। जैसे सोने की भस्म सोने से अधिक मूल्यवान होती है, उसी प्रकार रानी की समाधि भी रानी से अधिक कीमती है।
6. रानी लक्ष्मी बाई की समाधि का ही गुणगान कवि क्यों करते हैं?
उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई ने देश की खातिर अपना बलिदान दे दिया। उनकी वीरता की गाथा अमर है। एक सच्ची देशभक्त अमर वीरांगना की समाधि का गुणगान करके कवि उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
रानी	रानियाँ	माला	मालाएँ
समाधि	समाधियाँ	शाला	शालाएँ
ढेरी	ढेरियाँ	चिता	चिताएँ
प्यारी	प्यारियाँ	ज्वाला	ज्वालाएँ
चिनगारी	चिनगारियाँ	बाला	बालाएँ
कहानी	कहानियाँ	गाथा	गाथाएँ

2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
सुतंत्रता	स्वतंत्रता	आरति	आरती
लघू	लघु	स्थलि	स्थली
भगन	भग्न	आहूति	आहुति
मुल्यवती	मूल्यवती	भसम	भस्म
कशुद्र	क्षुद्र	कवीयों	कवियों
श्रधा	श्रद्धा	जंतू	जंतु

पाठ – 5 मैंने कहा, पेड़ (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय')

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए ---
i) पेड़ आँधी-पानी में भी किस तरह से अपनी जगह खड़ा है?
उत्तर- पेड़ आँधी-पानी में भी अपनी जगह मिट्टी में उसकी दूर-दूर तक फैली हुई जड़ों के कारण खड़ा है।
ii) सूरज, चाँद, मेघ और ऋतुओं के क्या-क्या कार्य कलाप हैं?
उत्तर- सूर्य धरती को धूप के रूप में प्रकाश और गर्मी प्रदान करता है जिनके कारण पेड़ पौधे तथा अन्य प्राणी अपना जीवन सुख से बिताते हैं। चाँद रात्रि के समय हल्का उजाला देता है। बादल उमड़- घुमड़ कर वर्षा लाते हैं। ऋतुएँ बदल-बदल कर पृथ्वी को भिन्न प्रकार का वातावरण प्रदान करती हैं।
iii) पेड़ में सहनशक्ति के अतिरिक्त और कौन-कौन से गुण हैं?
उत्तर- पेड़ में सहनशक्ति के अतिरिक्त मज़बूती, लंबी आयु, समझदारी, दूरदृष्टि, कृतज्ञता और विपरीत परिस्थितियों का आसानी से सामना करने की क्षमता आदि गुण होते हैं।
iv) पेड़ के बढ़ने और जड़ों के धरती में समाने का क्या संबंध है?
उत्तर- पेड़ के बढ़ने और जड़ों के धरती में समाने का बहुत गहरा संबंध है क्योंकि पेड़ की जड़ें जैसे-जैसे धरती में दूर तक फैलती जाती हैं, वैसे ही पेड़ की ऊँचाई और फैलावट भी बढ़ती जाती है।
v) पेड़ मिट्टी के अतिरिक्त और किस-किस को श्रेय देता है?
उत्तर- पेड़ मिट्टी के अतिरिक्त सूर्य, चंद्रमा, बादलों और ऋतुओं को श्रेय देता है।
vi) पेड़ ने क्या सीख प्राप्त की है?
उत्तर- पेड़ ने सीख प्राप्त की है कि 'जो मरण धर्मा हैं वे ही जीवनदायी हैं'।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण- विच्छेद कीजिए ----

शब्द	-	वर्ण विच्छेद	शब्द	-	वर्ण-विच्छेद

पेड़	-	प् + ए + ड़् + अ	सूरज	-	स् + ऊ + र् + अ + ज्+ अ
चाँद	-	च् + आँ + द् + अ	ऋतुएँ	-	ऋ + त् + उ + एँ
मेघ	-	म् + ए + घ् + अ	पत्तियाँ	-	प् +अ + त् + त् + इ + य्+ आँ
मिट्टी	-	म् + इ + ट् + ट्+ ई	जीवनदायी	-	ज् + ई + व्+ अ+ न् + अ + द् + आ+ य् + ई

2. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए ----

तद्भव	-	**तत्सम**	**तद्भव**	-	**तत्सम**
मिट्टी	-	मृतिका	चाँद	-	चंद्र
सूरज	-	सूर्य	पत्ता	-	पत्र
सिर	-	शिरः (शिरस्)	सीख	-	शिक्षा
पानी	-	वारि	सूखा	-	शुष्क

पाठ – 6 पाँच मरजीवे (योगेंद्र बख़्शी)

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

i) कवि ने गुरु गोबिन्द सिंह के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग इस कविता में किया है?

उत्तर- कवि ने गुरु गोबिन्द सिंह जी के लिए खालस महामानव, युग-द्दष्टा, युग- स्त्रष्टा और तेज पुंज विशेषणों का प्रयोग किया है।

ii) कविता में 'दशम नानक' किसे कहा गया है?

उत्तर- कविता में 'दशम नानक' सिक्खों के दशम गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को कहा गया है।

iii) 1699 ई. में विशाल मेला कहाँ लगा था?

उत्तर- 1699 ई. में विशाल मेला आनन्दपुर साहिब में लगा था।

iv) 'मरजीवा' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'मरजीवा' शब्द का अर्थ है - मरने को तैयार। 'मरजीवा' शब्द का एक और अर्थ भी है - मर कर जीवित होना।

v) अकाल पुरुष का फरमान क्या था?

उत्तर- अकाल पुरुष का फरमान था - धर्म की रक्षा के लिए, अन्याय से मुक्ति दिलाने के लिए तुरन्त एक बलिदान चाहिए।

vi) पाँचों मरजीवो के नाम लिखिए।

उत्तर- पाँचें मरजीवों के नाम हैं- दयाराम, धर्मराय, मोहकम चंद, साहिब चंद, हिम्मत राय।

vii) जो व्यक्ति न्याय के लिए बलिदान देता है, धर्म की रक्षा के लिए शीश कटा लेता है, उसे हम क्या कह कर पुकारते हैं?

उत्तर- जो व्यक्ति न्याय के लिए बलिदान देता है, धर्म की रक्षा के लिए शीश कटा लेता है, उसे हम मरजीवा कहकर पुकारते हैं।

viii) गुरु जी ने वीरों की क्या पहचान बताई?

उत्तर- गुरु जी के अनुसार शुभाचरण करते हुए जीवन पथ पर निडर होकर बलिदान देना ही वीरों की पहचान है।

ix) 'धर्म-अधर्म के संघर्ष की रात' का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'धर्म-अधर्म के संघर्ष की रात' का अर्थ है कि वह रात धर्म की रक्षा और अधर्म से मुक्ति के उपाय सोचने की रात थी।

(ख) भाषा-बोध

1. शब्दांश + मूल शब्द (अर्थ) नवीन शब्द (अर्थ)

अ + न्याय (इंसाफ) अन्याय (इंसाफ के विरुद्ध कार्य)

वि + श्वास (साँस) विश्वास (भरोसा)

उपर्युक्त मूल शब्द (न्याय) में 'अ' लगाने से 'अन्याय' तथा 'श्वास' में 'वि' शब्दांश लगाने से 'विश्वास' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'अ' तथा 'वि' उपसर्ग हैं।

अतएव **जो शब्दांश किसी शब्द के शुरू में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।**

निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अधर्म	अ	धर्म	उपहार	उप	हार
अतिरिक्त	अति	रिक्त	प्रकट	प्र	कट

2. मूल शब्द (अर्थ) + शब्दांश = नवीन शब्द (अर्थ)

सन्न (स्तब्ध,चुप) + आटा = सन्नाटा (स्तब्धता, चुप्पी)

कायर (डरपोक) + ता = कायरता (डरपोकपन)

उपर्युक्त मूल शब्द 'सन्न' में 'आटा' लगाने से 'सन्नाटा' तथा 'कायर' शब्द में 'ता' लगाने से 'कायरता' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'आटा' तथा 'ता' प्रत्यय हैं।

अतएव **जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।**

निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग- अलग करके लिखिए-

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
वैशाखी	वैशाख	ई	बलिदानी	बलिदान	ई
निवासी	निवास	ई	बलिहारी	बलिहार	ई

पाठ- 7 पंच परमेश्वर (लेखक - मुँशी प्रेमचन्द)
(अभ्यास हल सहित)
(क) विषय बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:

प्र 1. जुम्मन शेख की गाढ़ी मित्रता किसके साथ थी?
उत्तर- जुम्मन शेख की गाढ़ी मित्रता अलगू चौधरी के साथ थी।

प्र 2. रजिस्ट्री के बाद जुम्मन का व्यवहार खाला के प्रति कैसा हो गया था?
उत्तर- रजिस्ट्री के बाद जुम्मन का व्यवहार खाला के प्रति बहुत रूखा हो गया था।

प्र 3. ख़ाला ने जुम्मन को क्या धमकी दी?
उत्तर- ख़ाला ने जुम्मन को पंचायत बुलाने की धमकी दी।

प्र 4 बूढ़ी ख़ाला ने पंच किसको बनाया था?
उत्तर- बूढ़ी ख़ाला ने अलगू चौधरी को पंच बनाया था।

प्र 5. अलगू के पंच बनने पर जुम्मन को किस बात का पूरा विश्वास था।
उत्तर- अलगू के पंच बनने पर जुम्मन को फैसला खुद के हक में होने का पूरा विश्वास था।

प्र 6. अलगू ने अपना फैसला किसके पक्ष में दिया?
उत्तर- अलगू ने अपना फैसला बूढ़ी ख़ाला के पक्ष में दिया।

प्र 7. एक बैल के मर जाने पर अलगू ने दूसरे बैल का क्या किया?
उत्तर - अलगू ने दूसरे बैल को समझू साहू को बेच दिया।

प्र 8. समझू साहू ने बैल का कितना दाम चुकाने का वादा किया ?
उत्तर- समझू साहू ने बैल का डेढ़ सौ रुपया दाम चुकाने का वादा किया।

प्र 9. पंच परमेश्वर की जय-जयकार किस लिए हो रही थी?
उत्तर- सच्चे न्याय के लिए पंच परमेश्वर की जय-जयकार हो रही थी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए

प्र 1. जुम्मन और उसकी पत्नी द्वारा ख़ाला की ख़ातिरदारी करने का क्या कारण था?
उत्तर- ख़ाला के पास थोड़ी सी ज़मीन थी और ख़ाला का कोई दूसरा रिश्तेदार भी नहीं था। जुम्मन और उसकी पत्नी वह ज़मीन अपने नाम करवाना चाहते थे, इसलिए वे ख़ाला की ख़ातिरदारी करते थे।

प्र 2 बूढ़ी ख़ाला ने पंचों से क्या विनती की?
उत्तर- बूढ़ी ख़ाला ने पंचों से विनती की कि उसे ढंग का खाना और कपड़ा दिलवाया जाए नहीं तो उसका महीना वार खर्च बाँध दिया जाए, जिससे कि वह अपना अच्छा गुज़र बसर कर सके।

प्र 3. अलगू ने पंच बनने के झमेले से बचने के लिए बूढ़ी ख़ाला से क्या कहा?
उत्तर- अलगू ने पंच बनने के झमेले से बचने के लिए कहा कि वह जुम्मन शेख का बचपन का मित्र है, इसलिए वह पंचायत में उसके खिलाफ कुछ नहीं बोल सकेगा।

प्र 4. अलगू चौधरी ने अपना क्या फैसला सुनाया?
उतर - अलगू चौधरी ने पंचायत में अपना यह फैसला सुनाया कि बूढ़ी ख़ाला को अच्छा खाना और कपड़ा दिया जाए और साथ ही साथ उसको महीना वार खर्च भी दिया जाए नहीं तो रजिस्ट्री को रद्द कर दिया जाएगा।

प्र 5. अलगू चौधरी से खरीदा हुआ समझू साहू का बैल किस कारण मरा?
उत्तर - समझू साहू उस बैल पर बहुत अत्याचार करता था। वह उसे ढंग से चारा-पानी भी नहीं देता था। इसके अतिरिक्त वह उससे बहुत ज्यादा काम करवाता था और उसे मारता भी था। इस कारण बैल मर गया।

प्र 6 सरपंच बनने पर भी जुम्मन शेख अपना बदला क्यों नहीं ले सका?
उत्तर- सरपंच के स्थान पर बैठने से जुम्मन शेख के मन में कोई मैल नहीं रहा। उसकी वाणी भी सच का साथ देने लगी। इसलिए उसने अलगू चौधरी के हक़ में फैसला सुनाया और वह अपना बदला नहीं ले सका।

प्र 7. जुम्मन ने क्या फैसला सुनाया?
उत्तर- जुम्मन ने यह फैसला सुनाया कि बैल के पूरे दाम दिए जाएँ क्योंकि जब बैल खरीदा गया तो उसे कोई बीमारी न थी। यदि अलगू कोई रियायत समझू साहू से करना चाहते हैं तो वे कर सकते हैं।

प्र 8. "मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई" इस वाक्य का क्या अभिप्राय है?
उतर- इसका अभिप्राय यह है कि दोनों मित्रों के मन से वैर खत्म हो गया और वे एक दूसरे के दुबारा मित्र बन गये ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः-सात पंक्तियों में दीजिए:

प्र 1 पंच परमेश्वर कहानी का क्या उद्देश्य है?
उत्तर- पंच परमेश्वर कहानी का उद्देश्य है कि मानव जीवन में अनेक समस्याएँ आती हैं और उनका हल भी मानव अपनी बुद्धि से करता है। पंचों में परमेश्वर का निवास होता है। न्याय करते समय मित्र या दुश्मन नहीं देखा जाता ना ही अपना पराया देखा जाता है। उस वक्त केवल सच का साथ दिया जाता है। पंचों की वाणी और फैसला परमेश्वर की वाणी और फैसला होता है । यही पंच परमेश्वर कहानी का उद्देश्य है।

प्र 2. अलगू, जुम्मन और ख़ाला में से आपको कौन सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?
उत्तर- अलगू, जुम्मन और ख़ाला में से मुझे अलगू चौधरी का पात्र सबसे अच्छा लगा क्योंकि वह जुम्मन शेख का परम मित्र था परंतु फिर भी पंचायत में उसने पक्षपात नहीं किया और बूढ़ी ख़ाला के पक्ष में फैसला सुनाया, क्योंकि सच उसके साथ था। वह जानता था कि जुम्मन शेख गलत है। उसने स्वार्थवश अपने मित्र का साथ नहीं दिया अपितु न्याय किया। उसके बाद भी जब उसका बैल समझू साहू ने खरीद लिया तो उसने कई दिनों तक पैसों की मांग नहीं की और अंत में भी वह अपने मित्र से नाराज़ नहीं हुआ।

प्र 3. दोस्ती होने पर भी अलगू ने जुम्मन के खिलाफ फैसला क्यों दिया और दुश्मनी होने पर भी जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फैसला क्यों दिया?

उत्तर- अलगू चौधरी और जुम्मन शेख परम मित्र थे किंतु जब पंचायत में न्याय करने के लिए अलगू को सरपंच चुना गया तो उसने केवल न्याय का साथ दिया और बूढ़ी ख़ाला के पक्ष में फैसला दिया। इससे दोनों मित्रों की मित्रता में दरार आ गई परंतु जैसे ही अलगू और समझू साहू के झगड़े का निपटारा करने के लिए जुम्मन सरपंच बना तो उसे भी सरपंच के पद की अहमियत का पता चला। उसे महसूस हुआ कि पंचों की वाणी में परमात्मा का निवास होता है इसलिए उसने निजी क्रोध से ऊपर उठकर और न्याय के हक़ में फैसला सुनाते हुए अलगू चौधरी को न्याय दिया।

प्र 4 अलगू के पंच बनने पर जुम्मन के प्रसन्न होने और जुम्मन के पंच बनने पर अलगू के निराश होने का क्या कारण था?

उत्तर- बूढ़ी ख़ाला तथा जुम्मन शेख का झगड़ा जब पंचायत में आया तो अलगू को सरपंच बनाया गया। इससे जुम्मन प्रसन्न हो गया क्योंकि अलगू उसका परम मित्र था। जुम्मन को फैसला खुद के हक़ में होने का यकीन था परन्तु बूढ़ी ख़ाला के हक में फैसला होने से वह अलगू का शत्रु बन गया इसलिए समझू साहू और अलगू चौधरी के झगड़े में जुम्मन के सरपंच बनने से अलगू निराश हो गया।

(ख) भाषा बोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखें।

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
मुख	मुँह	गृह	घर
पंच	पाँच	मृत्यु	मौत
मित्र	मीत	संध्या	शाम
ग्राम	गाँव	मास	महीना
उच्च	ऊँचा	निष्ठुर	कठोर

2 विराम चिह्न:

i) जुम्मन ने क्रोध से कहा, "अब इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ।"
ii) खाला ने कहा, "बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"
iii) अलगू बोले, "खाला, तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।"
iv) उन्होंने पान, इलायची, हुक्के-तंबाकू आदि का भी प्रबंध किया था।

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें -

1. मौत से लड़कर आना (मृत्यु ना होना) मीना अपनी सास को कोसते हुए कहती थी कि वह मौत से लड़कर आई है।
2. कमर झुककर कमान होना (बूढ़ा हो जाना) रोहन के दादा जी की कमर झुककर कमान हो गई ।
3. दुःख के आँसू बहाना (दुःख के कारण रोना) संकट की इस घड़ी में कई मजदूर दुःख के आँसू बहा रहे हैं।
4. मुँह ना खोलना (चुप रहना) अलगू ने ख़ाला से कहा कि वह पंचायत में मुँह न खोलेगा।
5. रात-दिन का रोना (दुखी रहना) सास बहू के झगड़े के कारण घर में रात-दिन का रोना है।
6. राह निकालना (हल निकालना) दिमाग लगाने पर हर मुश्किल की राह निकलती है।
7. हुक्म सर माथे पर चढ़ाना (बात मानना) हमें बड़ों का हुक्म सिर माथे पर चढ़ाना चाहिए ।
8. मुँह खुलवाना (बात उगलवाना) पुलिस मुजरिम से मुँह खुलवा ही लेती है ।
9. कन्नी काटना (बचकर निकलना) आजकल के बच्चे कई कामों से कन्नी काटते हैं।
10. ईमान बेचना (बेईमान होना) हमें अपना ईमान नहीं बेचना चाहिए।
11.मन में कोसना (मन में बुरा भला कहना) किसी को मन में कोसना ठीक नहीं है।
12. जड़ खोदना (बीती बात को कुरेदना) पड़ोसी से दुश्मनी निकालने के लिए मोहन उसकी जड़ खोद रहा है ।
13. सन्नाटे में आना (सुन्न हो जाना) अपने विरुद्ध फैसला सुनकर रामू सन्नाटे में आ गया।
14. दूध का दूध पानी का पानी (सही न्याय करना) पंचायत ने न्याय देकर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।
15. जड़ हिलाना (खत्म करना) बेटे की बुरी संगति ने परिवार की जड़ हिला दी।
16. तलवार से ढाल मिलना (शत्रुता के भाव से मिलना) कहासुनी के बाद दोनों मित्रों में तलवार से ढाल मिलने वाली बात हो गई।
17. आठों पहर खटकना (हमेशा बुरा लगना) राजेश को अपने भाई आठों पहर खटकने लगे हैं ।
18. मन लहराना (खुशी होना) बच्चे को देखकर मां का मन लहराता है ।
19. लाले पड़ना (मुश्किल में पड़ना) गरीबी के कारण खाने के भी लाले पड़ गए।
20. मोलतोल करना (कीमत तय करना) बाज़ार में हर चीज मोलतोल कर के लेनी चाहिए।
21. लहू सूखना (डर जाना) दुर्घटना को देखते ही गाँव में सब का लहू सूख गया।
22. नींद को बहलाना (जाग-जाग कर रात काटना) चिंता होने पर नींद को बहलाने वाली बात हो जाती है।
23. हाथ धो बैठना (गँवा देना) बुरी आदतों के कारण तुम अपनी जायदाद से हाथ धो बैठे।
24. कलेजा धक्-धक् करना (व्याकुल होना) सुनसान रास्तों पर कई लोगों का कलेजा धक्-धक् करता है।
25. फूला ना समाना (बहुत खुश होना) माँ अपने बच्चों को देखकर फूली नहीं समाती ।
26. गले मिलना (आलिंगन करना) बहुत दिनों बाद दोनों मित्र आपस में गले मिले ।
27. मैल धुलना (दुश्मनी खत्म होना) सच सामने आने पर दोनों मित्रों के मन की मैल धुल गयी।

पाठ - 8 पाजेब

अभ्यास

क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक- दो पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न - i) :- मुन्नी के लिए पाजेब कौन लाया ?
उत्तर :- मुन्नी की बुआ उसके लिए पाजेब लाई थी।
प्रश्न - ii) :- मुन्नी को पाजेब मिलने के बाद आशुतोष भी किस चीज़ के लिए ज़िद करने लगा ?
उत्तर :- बुआ से मुन्नी को पाजेब मिलने के बाद आशुतोष भी अपने लिए एक नई साइकिल लेने के लिए ज़िद (हठ) करने लगा।
प्रश्न iii):- लेखक की पत्नी को पाजेब चुराने का संदेह सबसे पहले किस पर हुआ ?
उत्तर :- लेखक की पत्नी को सबसे पहले पाजेब चुराने का संदेह अपने घर के नौकर बंसी पर हुआ।
प्रश्न- iv) :- आशुतोष को किस चीज़ का शौक था ?
उत्तर :- आशुतोष को पतंग उड़ाने और साइकिल चलाने का शौक था।
प्रश्न- v):- वह शहीद की भाँति पिटता रहा था। रोया बिल्कुल नहीं था.....
उपर्युक्त संदर्भ में बताइए कि कौन पिटता रहा ?
उत्तर :- वह शहीद की भाँति पिटता रहा था। रोया बिल्कुल नहीं था....। कहानी में आए उपर्युक्त संदर्भ में आशुतोष पिटता रहा।
प्रश्न- vi):- गुम हुई पाजेब कहाँ से मिली ?
उत्तर:- गुम हुई पाजेब आशुतोष की बुआ के पास से मिली।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न (i) :- लेखक को आशुतोष पर पाजेब चुराने का संदेह क्यों हुआ ?
उत्तर:- आशुतोष के पिता को अपने घर के नौकर बंसी पर पूरा विश्वास था कि वह कभी भी पाजेब नहीं चुरा सकता। आशुतोष पर चोरी का संदेह उसके पिता के लिए तब यकीन में बदल गया जब वह शाम को अपने लिए नई पतंग और डोर का पिन्ना लेकर घर आया। तब लेखक को अपने बेटे आशुतोष पर पाजेब चुराने का संदेह हुआ।
प्रश्न (ii) - पाजेब चुराने का संदेह किस-किस पर किया गया ?
उत्तर :- पाजेब चुराने का संदेह सबसे पहले कहानीकार की पत्नी ने अपने घर में काम करने वाले नौकर बंसी के ऊपर किया। इसके बाद पाजेब चुराने का संदेह (शक) अपने बेटे आशुतोष पर किया। चोरी का इल्ज़ाम लगाने के बाद आशुतोष से की गई छानबीन में आशुतोष के दोस्त छुन्नू का नाम सामने आया और छुन्नू पर भी पाजेब की चोरी का शक किया गया।
प्रश्न (iii): आशुतोष ने चोरी नहीं की थी फिर भी उसने चोरी का अपराध स्वीकार किया। इसका क्या कारण हो सकता है?
उत्तर:- पाजेब कहानी में आशुतोष ने कोई चोरी नहीं की थी, यह बात पूर्ण रूप से सच है, किंतु घर के सारे सदस्य पाजेब चुराने का शक उसी पर कर रहे थे। केवल चोरी के शक के कारण उसे डराया और मारा पीटा गया। उसे कोठरी में भी बंद किया गया। माता-पिता दोनों उस पर बार-बार अपना क्रोध प्रकट कर रहे थे। वे अपने बेटे आशुतोष पर चिल्ला रहे थे। उससे बार-बार एक ही सवाल पूछा जा रहा था कि पाजेब किसने ली? बार-बार के पूछे जाने वाले प्रश्नों से बचने के लिए तथा घर में शांति बनाए रखने के लिए बेगुनाह होते हुए भी आशुतोष ने चोरी का अपराध स्वीकार किया होगा।
प्रश्न (iv):- पाजेब कहाँ और कैसे मिली?
उत्तर :- मुन्नी की गुम हुई पाजेब आशुतोष की बुआ के पास मिली। आशुतोष पर चोरी का इल्ज़ाम लगने के बाद जब उसकी बुआ उनके घर आई और उसने आशुतोष माता-पिता से कहा कि जो कागज़ात वह माँग रहे थे, वे सभी इसी बॉक्स में हैं। तभी उसने अपनी बॉस्केट की जेब में हाथ डालकर पाजेब निकाली और कहने लगी कि उस दिन कागज़ात ढूंढते समय भूल से यह पाजेब उसके साथ ही चली गई थी।
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह सात पंक्तियों में दीजिए :
प्रश्न (i):- आशुतोष का चरित्र चित्रण कीजिए।
उत्तर:- आशुतोष जैनेंद्र कुमार द्वारा लिखी 'पाजेब' कहानी का एक प्रमुख पात्र है। यह कहानी उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। वह एक छोटा-सा बालक है। बुआ के माध्यम से अपनी बहन मुन्नी की ज़िद पूरी होने पर वह भी नई साइकिल लेने के लिए हठ करता है। उसकी बहन मुन्नी जब पाजेब पहनती है तो वह उसको बाहर घुमाने में गर्व महसूस करता है। आशुतोष पर जब चोरी का इल्ज़ाम लगाया जाता है तो वह हठीला और उद्दंड हो जाता है। पिटाई से बचने के लिए वह झूठ भी बोलता है। उसमें अपना दोष दूसरों पर डालने का अवगुण भी है। कहानी में उसका चरित्र चित्रण पूरी तरह से मनोविज्ञान से प्रभावित है।
प्रश्न (ii):- आशुतोष के माता-पिता ने बिना किसी मनौवैज्ञानिक सूझबूझ के साथ आशुतोष के प्रति जो व्यवहार किया, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:- आशुतोष के माता-पिता ने आशुतोष के साथ तनिक भी अच्छा व्यवहार नहीं किया, उन्होंने इस बारे में नहीं सोचा कि बच्चों से कैसा व्यवहार करना चाहिए? उसके पिता ने उस पर केवल चोरी के शक़ के कारण उसे डराया, धमकाया और उसके कान तक खींचे। पिटाई होने पर उसके गाल भी सूज गए। छोटा बालक पूरी तरह से डरा हुआ था। उसे कोठरी में बंद करके तो वे अपने अत्याचार की सीमा पार कर गए। फिर जब बुआ आकर उसके माता-पिता को पाजेब देती है तो उसके पिता अपने किए पर शर्मिंदा हो जाते है। उसके माता-पिता का ये व्यवहार बताता है कि आशुतोष के साथ उनके द्वारा मनौवैज्ञानिक सूझबूझ की बजाय अनुचित व्यवहार किया।
प्रश्न (iii):- आशुतोष के किन कथनों और कार्यों से संकेत मिलता है कि उसने पाजेब नहीं चुराई थी?
उत्तर:- पाठ में आशुतोष के निम्नलिखित कथनों और कार्यों से हमें पता चलता है कि उसने पाजेब नहीं चुराई थी :
1.पाजेब न मिलने पर आशुतोष के पिता ने उसकी माँ से पूछा था कि उसने आशुतोष से पूछा? तो उसकी माँ ने कहा, "हाँ, वो तो स्वयं ट्रंक और बॉक्स के नीचे घुस घुसकर ढूँढने में उसकी मदद कर रहा था।"
2.अपने पिता की बात का पालन करते हुए आशुतोष कमरे के कोने-कोने में पाजेब को ढूँढता है।
3.पाजेब चोरी के झमेले को सुलझाते समय आशुतोष छुन्नू के पास जाने से भी मना कर देता है।
4. आशुतोष अपने माता-पिता से कहता है कि छुन्नू के पास होगी तो देखना।
5. वह किसी भी बात का उत्तर हाँ या ना में ठीक तरीके से नहीं दे रहा था।
प्रश्न (iv):- " प्रेम से अपराध वृत्ति को जीता जा सकता है, आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है....." इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- इस वाक्य का आशय है कि अपराध की वृति को दबाने के लिए केवल दण्ड का सहारा लेना ही सदैव ठीक नहीं होता। दोषी व्यक्ति को दण्ड देना उसे उदण्ड बनाने का काम करता है। जिसके कारण वह ज़िद्दी, भीरू और हठीला बन जाता है। जबकि प्यार और स्नेहपूर्ण व्यवहार से व्यक्ति की भावनाओं को समझने का सही प्रयास किया जा सकता है। दया और प्रेम से व्यक्ति दूसरे के दिल को पिघला कर मोम कर देता है। दूसरे व्यक्ति के मन के अंदर की बातों को जान लेता है और उसकी अपराध वृत्ति को अपने प्यार के कोमल हथियार से जीत लेता है।

भाषा-बोध

1. प्रश्न:- निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए।

प्रश्न: बुआ ने कहा छी छी तू कोई लड़की है।

उत्तर:- बुआ ने कहा, "छी-छी! तू कोई लड़की है?"

प्रश्न:- मैंने कहा छोडिए भी बेबात की बात बढ़ाने से क्या फायदा

उत्तर: मैंने कहा, "छोड़िए भी बेबात की बात बढ़ाने से क्या फायदा!"

प्रश्न:- मैंने कहा क्यों रे तू शरारत से बाज़ नहीं आयेगा

उत्तर:- मैंने कहा, "क्यों रे, तू शरारत से बाज नहीं आयेगा?"

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

1. खुशी का ठिकाना न रहना (बहुत प्रसन्न होना) नई कार मिलने पर राम की खुशी का ठिकाना न रहा।

2. टस से मस न होना (अपनी ज़िद पर अड़े रहना) अगर हमारा लक्ष्य पक्का है तो हमें टस से मस नहीं होना चाहिए।

3. चैन की साँस लेना (राहत महसूस करना) आतंकवादी हमले से बचकर सैनिक बेटे के सही सलामत घर लौटने पर उसके परिवार ने चैन की साँस ली।

4. मुँह फुलाना (रूठ जाना, नाराज़ होना) फेल होने पर पिता जी की फटकार सुनकर मोहन मुँह फुलाकर बैठ गया।

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :-

1. ਸ਼ਾਮ ਹੋਣ 'ਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਭੂਆ ਚਲੀ ਗਈ।

उत्तर :- संध्या होने पर बच्चों की बुआ चली गई।

2. ਸੱਚ ਕਹਿਣ ਵਿੱਚ ਘਬਰਾਉਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ।

उत्तर :- सच कहने में घबराना नहीं चाहिए।

3. ਉਸ ਦਿਨ ਭੁੱਲ ਨਾਲ ਇਹ ਇੱਕ ਪੰਜੇਬ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਚਲੀ ਗਈ ਸੀ।

उत्तर :- उस दिन भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ चली गई थी।

4. ਬਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਨਵੀਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪੰਜੇਬ ਚੱਲੀ ਹੈ।

उत्तर:- बाज़ार में एक नई प्रकार की पाजेब चली है।

पाठ - 9 दो हाथ

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए -

1 नीरू की दिनचर्या क्या थी?

उत्तर- नीरू की दिनचर्या में घर का सारा काम करना, जैसे बर्तन साफ करना, रसोई का काम करना आदि शामिल था। इसके अतिरिक्त वह कॉलेज की पढ़ाई भी करती थी।

2. नीरू को प्रायः किसका अभाव खलता था?

उत्तर - नीरू को प्राय: अपनी माँ का अभाव खलता था।

3. नीरू अपनी हम उमर सहेलियों को खेलते देखकर क्या सोचा करती थी?

उत्तर- नीरू अपनी हम उमर सहेलियों को खेलते देखकर सोचा करती थी कि अगर उसकी माँ भी जीवित होती तो वह भी बेफिक्र होकर अपनी सहेलियों के साथ खेल सकती थी।

4. पिता का दुलार पाकर नीरू क्या भूल जाती थी?

उत्तर- पिता का दुलार पाकर नीरू अपनी माँ की कमी को भूल जाती थी।

5. नीरू ने पढ़ाई के साथ अन्य कौन से इनाम जीते थे?

उत्तर- नीरू ने पढ़ाई के साथ-साथ संगीत, चित्रकला और खेलों में भी बहुत से इनाम जीते थे।

6. कॉलेज की लड़कियाँ हफ्तों से किस की सजावट में जुटी थीं?

उत्तर- कॉलेज की लड़कियाँ हफ्तों से अपने नाखूनों की सजावट में जुटी थीं।

7. सभापति ने कौन सा निर्णय सुनाया ?

उत्तर- सभापति ने निर्णय सुनाया कि नीरू के हाथ ही सबसे अधिक सुंदर हैं।

8. घर लौटते समय नीरू खुश क्यों थी?

उत्तर- घर लौटते समय नीरू इसलिए खुश थी क्योंकि आज उसके कटे-फटे भद्दे हाथों का वास्तविक सौंदर्य सबको समझ आ गया था।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए -

1. नीरू घर के कौन-कौन से काम किया करती थी?

उत्तर- नीरू की माँ बचपन में ही गुज़र गई थी। नीरू अपने भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। इसलिए घर का सारा काम नीरू को ही करना पड़ता था। वह खाना बनाती थी, जूठे बर्तन साफ़ करती थी, घर की सफ़ाई करती थी, कपड़े धोती थी तथा घर के अन्य छोटे-बड़े काम भी किया करती थी।

2. नीरू की माँ उसे घर के काम करने से क्यों रोकती थी?

उत्तर- नीरू की माँ उसे बहुत प्यार करती थी। वह उसे घर का कोई काम नहीं करने देती थी। वह नीरू से कहती थी कि तू ऐसे छोटे-मोटे काम करने के लिए नहीं बनी। तू पढ़ाई लिखाई किया कर। ऐसे काम तो हम जैसी अनपढ़ औरतों के हैं। तुम्हारे हाथ तो इतने सुन्दर हैं। तुम्हारी उंगलियों ककड़ी की तरह कोमल हैं। इन पाँचों उंगलियों में पाँच अंगूठियाँ डालूँगी।

3. नीरू की सहेलियाँ उसका मज़ाक क्यों उड़ाती थीं?

उत्तर- माँ के गुज़र जाने के बाद घर का सारा काम नीरू को ही करना पड़ता था जिससे उसके हाथ जगह-जगह से कटे-फटे हो गए थे तथा देखने में बहुत भद्दे लगते थे। नीरू की सहेलियाँ उसके गंदे हाथों को देखकर उसका मज़ाक उड़ाती थीं। वे कहती थीं कि तेरे हाथ इतने गंदे हैं कि कोई तुझसे शादी नहीं करेगा। चेहरे की सुंदरता के बाद हाथों की सुंदरता ही सबसे महत्वपूर्ण होती है। इस तरह की बातों से वे नीरू का खूब मज़ाक उड़ाती थीं।

4. नीरू को उसके पिता ने हाथों का क्या महत्व समझाया?

उत्तर- नीरू के पिता भी उससे बहुत प्यार करते थे। नीरू को परेशान देख उन्होंने नीरू को हाथों का महत्व समझाते हुए कहा कि वह ऐसी व्यर्थ की बातों पर ध्यान मत दिया करे। काम करने वाले की शोभा तो उसके हाथों से ही आँकी जाती है। अपने हाथ से काम करने वाली लड़की तो शक्ति और संपन्नता का प्रतीक होती है काम करने वाले ये दोनों हाथ मानव जीवन की शोभा हैं। भगवान ने ये दो हाथ कर्म करने के लिए ही बनाए हैं। काम करने से हाथों की सुंदरता कम नहीं होती बल्कि और बढ़ती है।

5. इनाम लेते समय नीरू को शर्म क्यों आ रही थी?

उत्तर - इनाम लेते समय नीरू को इसलिए शर्म आ रही थी क्योंकि एक तो उसके हाथ पहले से ही इतने कटे-फटे तथा भद्दे थे, दूसरे आज जल्दी-जल्दी में वह अपने हाथ धोना भी भूल गई थी। वह यह सोच रही थी कि इनाम देते वक्त जब सभापति उसके गंदे हाथों को देखेंगे तो वे क्या सोचेंगे।

6 'कर्मशीलता ही हाथों की शोभा होती है।' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उक्त पंक्ति के माध्यम से लेखिका ने अपने पाठकों को समझाना चाहा है कि हाथों की असली शोभा तो कर्म करने में ही होती है। हाथ सर्जक हैं। उनका सौंदर्य कार्य करने की क्षमता है। वे जीवन का बाहरी नहीं आंतरिक सौंदर्य और शृंगार हैं। कर्म करने से ही समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है और हाथों के बिना कर्म करना संभव नहीं है। इसलिए हाथों का वास्तविक धर्म कर्म ही है।

7. इनाम लेकर लौटते समय नीरू को अपने हाथ सुंदर क्यों लग रहे थे?

उत्तर- इनाम लेकर लौटते समय आज नीरू बहुत प्रसन्न थी। उसको अपने हाथ बहुत सुंदर लग रहे थे। आज उसके कटे-फटे,भद्दे हाथों का कोई मज़ाक नहीं उड़ा रहा था । आज सही मायने में उसके हाथों का रूप आँका गया था। सभापति ने उसके हाथों को कर्मशीलता का अपूर्व उदाहरण कहा था और उसके कर्मशीलता के कारण ही उसे आज कॉलेज में सबसे सुंदर हाथों का इनाम भी मिला था। उसे हाथों की वास्तविक सुंदरता का पता चल गया था। इसलिए आज नीरू को अपने हाथ बहुत सुंदर लग रहे थे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6-7 पंक्तियों में दीजिए :

1. नीरू का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर- 'दो हाथ' डॉ. इंदू बाली दवारा रचित एक प्रसिद्ध कहानी है। नीरू इस कहानी की प्रमुख पात्रा है। नीरू के चरित्र की कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं

ज़िम्मेदारी की भावना - नीरू अपने भाई बहनों में सबसे बड़ी है। माता की मृत्यु के बाद उन सब की ज़िम्मेदारी नीरू के कंधों के पर आ जाती है | नीरू इस ज़िम्मेदारी को बहुत अच्छी तरह से निभाती है।

घर के कामों में कुशल - नीरू घर के सभी काम बड़ी कुशलता पूर्वक करती है। उसका सारा दिन खाना बनाने, बर्तन माँजने, घर की सफ़ाई करने, कपड़े धोने आदि में ही निकल जाता है।

अपने माता-पिता से प्यार करने वाली - नीरू अपने माता-पिता से बहुत प्यार करती है। वह अक्सर अपनी माँ को याद करके रोती है। उसके पिता जब घर के कामकाज में उसका हाथ बँटाना चाहते हैं तो वह उन्हें काम नहीं करने देती । उसके पिता जब प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हैं तो वह दोगुनी शक्ति से काम में जुट जाती है।

विभिन्न कलाओं में श्रेष्ठ - नीरू पढ़ने में बहुत होशियार थी। पढ़ाई के साथ साथ वह संगीतकला, चित्रकला तथा खेलों में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन करती थी।

कर्मशील हाथों वाली -नीरू एक कर्मशील हाथों वाली लड़की है। वह दिनभर किसी न किसी काम में ही लगी रहती है। वह कभी-कभी अपने भद्दे हाथों को देखकर बेचैन हो जाती है लेकिन सभापति द्वारा उसके हाथों को सबसे सुंदर हाथों का खिताब मिलने पर वह बहुत प्रसन्न होती है। अतः नीरू एक बहुत ही नेक, समझदार और गुणवान लड़की है।

2. नीरू ने कौन सा अनोखा सपना देखा था?

उत्तर- नीरू कॉलेज में होने वाले वार्षिक उत्सव को लेकर बहुत परेशान थी । उसकी सहेलियाँ हफ्तों से अपने हाथों और नाखूनों की सजावट में जुटी हुई थीं। वह अपने कटे-फटे, भद्दे हाथों को लेकर बहुत परेशान थी। उसकी सहेलियाँ भी उसका इस बात पर बहुत मज़ाक उड़ातीं थीं। सारा दिन उसके दिमाग में यही बातें घूमती रहती थीं। रात में उसे उन्हीं सब बातों का सपना आया जिसमें उसे चारों ओर सुंदर-सुंदर हाथ ही हाथ दिखाई देते थे। इन सुंदर-सुंदर हाथों के बीच उसके कटे-फटे, मैले, धब्बेदार, टेढ़े नाखूनों वाले, आटा लगे, कहीं से जले, काले-पीले, बदशक्ल दो हाथ दिखाई दिए। लेकिन इन हाथों के नजर आते ही चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। यह सपना देखने के बाद नीरू दोबारा सो नहीं पाई।

3. सभापति ने हाथों का वास्तविक सौंदर्य क्या बताया?

उत्तर- सभापति नीरू के हाथों को देखकर बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने हाथों का वास्तविक सौंदर्य बताते हुए कहा कि सुंदर हाथ कर्म से सजते हैं। कर्मशीलता ही हाथों की शोभा होती हैं। हाथ सर्जक हैं। उनका सौंदर्य कार्य करने की क्षमता है। वे जीवन का बाहरी नहीं, आंतरिक सौंदर्य और शृंगार है। वे हाथ सबसे सुंदर हैं जो कर्म साधना में अपनी सुध-बुध भी खो बैठे हैं। जो सदा दूसरों की सेवा में लगे रहते हैं। जिन्हें अपना कोई होश नहीं। वह हाथों पर लगे आटे, काले-पीले, जले निशान स्थान-स्थान से कटे-फटे हाथों को सृष्टि का अलौकिक सौंदर्य मानते हैं।

4. 'दो हाथ' कहानी का उद्देश्य क्या है?

उत्तर- 'दो हाथ' डॉ. इंदु बाली द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में दो हाथों के माध्यम से सौंदर्य के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है जिसमें लेखिका ने नीरू के माध्यम से कर्मशीलता का संदेश दिया है। सौंदर्य का एक रूप कर्म

करने में विद्यमान है। ईश्वर ने हमें दो हाथ केवल सजाने के लिए नहीं बल्कि काम करने के लिए दिए हैं। हाथों का वास्तविक सौंदर्य कर्म करने में है। फिर भले ही वे खराब हो जाएं, खुरदरे हो जाएं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। इसी संदेश द्वारा लेखिका ने लोगों की मानसिक कुंठा को दूर करने का प्रयास किया है। बिन माँ की नीरू जिसे घर का सारा कार्य करना पड़ता है, अपने हाथों के खराब होने पर कुंठाग्रस्त है। परंतु कॉलेज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर सभापति की ओर से उसे विशेष रूप से उसके उन हाथों के लिए इनाम दिया गया जिन पर काम करने के सौंदर्य की आभा झलक रही थी। इस प्रकार यह कहानी कर्म की महत्ता को अपने पाठकों तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल रही है।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझ कर इनका अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए -

1. मन भर आना (भावुक होना) अपनी माँ को याद करके नीरू का मन भर आता था।

2. फूट-फूट कर रोना (बहुत ज़्यादा रोना) घर की छत गिर जाने पर गरीब व्यक्ति फूट-फूट कर रोने लगा।

3. आँखें डबडबा आना (आँखों में आँसू आ जाना) सभापति द्वारा नाम लिए जाने पर नीरू की आँखें डबडबा गईं।

4. दम घुटना (उकता जाना) दिन रात की चिकचिक से मेरा तो इस घर में अब दम घुटने लगा है।

2. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए -

1. पिता झट पूछते क्या बात है मेरी रानी बिटिया उदास क्यों है

उत्तर- पिता झट पूछते," क्या बात है, मेरी रानी बिटिया उदास क्यों है?"

2. पिता जी सिर पर हाथ फेरते हुए कहते शायद मैं तुम्हें माँ का पूरा प्यार नहीं दे पाया

उत्तर- पिता जी सिर पर हाथ फेरते हुए कहते," शायद मैं तुम्हें माँ का पूरा प्यार नहीं दे पाया।"

3. वह उमंग से भर कहने लगी सच पिताजी आप ठीक कहते हैं

उत्तर- वह उमंग से भर कहने लगी," सच पिता जी, आप ठीक कहते हैं।"

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए -

1. ਬਰਤਨ ਸਾਫ਼ ਕਰਕੇ ਨੀਰੂ ਨੇ ਰਸੋਈ ਨੂੰ ਧੋਇਆ ਅਤੇ ਸਾਗ ਕੱਟਣ ਵਿਚ ਮਗਨ ਹੋ ਗਈ।

उत्तर- बर्तन साफ़ करके नीरू ने रसोई को धोया और साग काटने में मग्न हो गई।

2. ਸਭਾਪਤੀ ਨੇ ਫ਼ੈਸਲਾ ਸੁਣਾਇਆ ਤਾਂ ਸਭ ਹੈਰਾਨ ਹੋ ਗਏ।

उत्तर- सभापति ने फ़ैसला सुनाया तो सब हैरान हो गए।

3. ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਇਹ ਦੋ ਹੱਥ ਕਰਮ ਕਰਨ ਲਈ ਬਣਾਏ ਹਨ।

उत्तर- भगवान ने ये दो हाथ कर्म करने के लिए बनाए हैं।

पाठ – 10 साए (लेखक - हिमांशु जोशी)

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए।

क) परिवार वाले हर रोज़ किसकी राह देखते थे?

उत्तर - परिवार वाले हर रोज़ रंग-बिरंगे टिकटों वाले पत्र की राह देखते थे।

ख) घर का मुखिया कारोबार करने कहाँ गया हुआ था?

उत्तर - घर का मुखिया कारोबार करने अफ्रीका गया हुआ था।

ग) अज्जू बड़ा होकर क्या बनना चाहता था?

उत्तर - अज्जू बड़ा होकर इंजीनियर बनना चाहता था।

घ) अज्जू को नैरोबी में मिला वृद्ध व्यक्ति कौन था?

उत्तर - अज्जू को नैरोबी में मिला वृद्ध व्यक्ति उसके पिता जी का जिगरी दोस्त था।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए।

क) नैरोबी के अस्पताल से आए पत्र को पढ़कर पत्नी परेशान क्यों हो गई?

उत्तर - नैरोबी के अस्पताल से आए पत्र को पढ़कर पत्नी इसलिए परेशान हो गई क्योंकि यह पत्र उसके पति का था, जो कि बहुत बीमार था। रंग-भेद के कारण पहले उसे यूरोपियन लोगों के अस्पताल में जगह नहीं मिली किन्तु बाद में कुछ कहने-कहलवाने पर स्थान तो मिला पर इस अनावश्यक विलंब के कारण रोग काबू से बाहर हो गया था। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी थी। अब उसके बचने के आसार बहुत ही कम थे। ऐसे समय में उसे अपनी पत्नी और बच्चों की चिंता सता रही थी।

ख) घर से जाने वाले पत्र में अज्जू और तनु के बारे में क्या क्या लिखा था?

उत्तर - घर से जाने वाले पत्र में अज्जू और तनु के बारे में लिखा था कि बच्चे उन्हें बहुत याद करते हैं। उन्हें देखने भर को तरसते रहते हैं। जो-जो हिदायतें चिट्ठियों में लिखी रहती हैं, उनका अक्षरशः पालन करते हैं। मां को किसी किस्म का कष्ट नहीं देते; कहना मानते हैं; पढ़ने में बहुत मेहनत करते हैं। अज्जू बड़ा होकर पापा की तरह अफ्रीका जाना चाहता है। वह इंजीनियर बनना चाहता है और पापा के साथ खूब पैसा कमाना चाहता है। वह बारह वर्ष का हो गया है और छठी कक्षा में अव्वल स्थान पर आया है। तनु अब अठारह वर्ष की हो गई है, उसका विवाह करना है- इत्यादि बातें लिखी होती थीं।

ग) तनु के लिए वर सहज रुप से मिल जाने का क्या कारण था?

उत्तर - तनु के लिए वर सहज रूप से मिल जाने का कारण था - उसके पिता का अफ्रीका में काम करना। लड़के वालों को लगा कि पिता विदेश में है और खूब सोना कमा रहा होगा। शादी खूब धूमधाम से होगी। दहेज की भी उन्हें कोई चिंता ना थी इसलिए जल्द ही एक खाते-पीते घर का लड़का मिल गया।

घ) अज्जू के लिए अफ्रीका से क्या-क्या आया था?

उत्तर - अज्जू जब हाई स्कूल की परीक्षा में जिले में सर्वप्रथम रहा और खेलों में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया तो अज्जू ने बहुत से सर्टिफिकेट तथा खेलकूद में मिलने वाली वस्तुओं के फोटो अपने पिताजी को भेजे। बदले में अज्जू के लिए कीमती कैमरा आया। गर्म सूट का कपड़ा आया। सुंदर घड़ी आई और मर्मस्पर्शी लंबा पत्र आया।

ङ) पढ़ाई पूरी करने के बाद अज्जू ने अफ्रीका जाने का निर्णय किन किन कारणों से किया?

उत्तर - पढ़ाई पूरी करने के बाद अज्जू अच्छी नौकरी की तलाश में था। उसे नौकरी कहीं नहीं मिल रही थी। उसके मन में पिता से मिलने की इच्छा बढ़ती जा रही थी। बचपन से उसने अपने पिता को नहीं देखा था। वह उन्हें मिलना चाहता था और उनसे प्यार से बातें करना चाहता था। इसलिए उसने अचानक से पिता के पास जाने का निर्णय किया ताकि वह अपने पिता को चौंका सके।

च) अज्जू को अंत में पिता के जिगरी दोस्त ने भरे गले से क्या बताया?

उत्तर - अज्जू को अंत में पिता के जिगरी दोस्त ने भरे गले से बताया," तुम्हारे पिता तो तभी गुज़र गए थे। अपने सारे कारोबार से, उनके ही हिस्से के पैसे तुम्हें नियमित रूप से भेजता रहा। कितने वर्षों से मैं इसी दिन के इंतज़ार में था..... अब तुम बड़े हो गए हो। अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बँटाओ। तुम सरसब्ज़ हो गए, मेरा वचन पूरा हो गया जो मैंने उसे मरते समय दिया था।....."

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए-

क) वृद्ध व्यक्ति का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर - 'साए' कहानी में प्रस्तुत वृद्ध व्यक्ति का चरित्र एक सज्जन और अच्छे मित्र का है। वृद्ध व्यक्ति मित्रता का एक सच्चा और जीता जागता उदाहरण है। वह अपने मित्र की मृत्यु के समय अपने मित्र के साथ उसके परिवार का पालन पोषण करने का जो वादा करता है, उसे वह जीवन भर निभाता है। वह नियमित रूप से अपने मित्र के घर वालों को रुपए भेजता है। तनु के विवाह के लिए जेवर, कपड़े भेजता है। समय-समय पर उपहार भेजता है और परिवार वालों को दिलासा देने वाले पत्र भी निरंतर लिखता रहता है। परिवार और बच्चों को किसी भी प्रकार का दुःख न हो, इसलिए वह उसके परिवार वालों के साथ उसकी मृत्यु का दुखद समाचार नहीं बाँटता। अपने दोस्त के बच्चों को अपने ही बच्चों के समान प्यार और स्नेह देता है। अज्जू को अपने पिता के बारे में पता न चले इसलिए वह अज्जू को अफ्रीका आने से मना कर देता है। सच में वृद्ध व्यक्ति एक सच्चा मित्र, अच्छा इंसान और विवेकशील व्यक्ति है।

ख) वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू और उसके परिवार की देखभाल में क्या भूमिका निभाई और क्यों?

उत्तर - वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू और उसके परिवार की देखभाल में बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह आजीवन परिवार के संपर्क में रहा। उसने अपने दोस्त के परिवार की प्रत्येक ज़रूरत का ध्यान रखा। समय-समय पर परिवार को धन आदि से सहायता प्रदान की। पत्रों के माध्यम से जीवन जीने की प्रेरणा भी दी। तनु के विवाह में स्वयं ना जाकर रुपए, जेवर तथा कपड़े भेजे। बच्चों को सच्चाई न बता कर उन्हें एक सफल तथा ज़िम्मेदार व्यक्ति बनाया। वृद्ध व्यक्ति ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसने अपने मृत मित्र को वचन दिया था कि वह उसके परिवार का ध्यान रखेगा, परिवार को टूटने या बिखरने नहीं देगा और बच्चों की देखभाल में भी कोई कमी नहीं छोड़ेगा।

ग) 'साए' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'साए' कहानी के नामकरण में लेखक हिमांशु जोशी ने मौलिकता, संक्षिप्तता तथा उत्सुकता जैसे तत्वों को समाहित किया है। कहानी का नाम 'साए' इतना आकर्षक और उपयुक्त है कि यह पाठक एवं आलोचक को स्वयं ही आकर्षित कर लेता है। इस कहानी का शीर्षक प्रतीक रूप में अपनी सार्थकता पूर्ण किए हुए हैं। वृद्ध व्यक्ति का अपना मित्र धर्म पालन करना एक उदाहरण है। दूसरा उदाहरण बच्चों का अपने पिता के आने तथा उनके होने का जो आसरा जीवन भर बना रहता है। वह 'साए' शीर्षक की सार्थकता को पूर्णतः सार्थक सिद्ध करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'साए' कहानी का शीर्षक मित्रता, ईमानदारी तथा भाईचारे की भावना को हृदय तक पहुँचाने में पूरी तरह उपयुक्त है।

घ) निम्नांकित कथनों के भावार्थ स्पष्ट करो-

i) "तिनकों के सहारे तो हर कोई जी लेता है लेकिन कभी-कभी हम तिनकों के साए मात्र के आसरे भँवर से निकलकर किनारे पर आ लगते हैं।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ यह है कि किसी सहारे या आश्रय के साथ तो प्रत्येक मनुष्य जीवन जी लेता है लेकिन कभी-कभी उस सहारे या आश्रय के समाप्त होने पर भी हम उसकी छाया या साए को ही सहारा समझकर जीवन के भँवर को पार कर जाते हैं। हमें अपना जीवन जीने में कोई दिक्कत नहीं होती। हम अपने जीवन में आने वाली मुश्किलों को आसानी से हल कर लेते हैं। उसी सहारे या आश्रय के कारण हमें अपना जीवन बोझ की बजाय प्यारा और सुगम लगने लगता है।

ii) "हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने-कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, आसरे की एक अदृश्य डोर के सहारे....."

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ यह है कि जब हमारे पास कोई उम्मीद या उस उम्मीद से जुड़ी हुई हल्की सी भी रोशनी होती है तो हम सारी रुकावटों को पार करते हुए जीवन क्षेत्र में आगे बढ़ते जाते हैं। हमें रोकने वाला कोई नहीं होता। हम कमज़ोर, हताश, निराश, बेसहारा और अकेले होते हुए भी एक न दिखने वाली उम्मीद के सहारे कठिन से कठिन स्थितियों को पार करते चले जाते हैं। जीवन की समस्त कठिनाइयाँ सरलता से उसके अनुकूल होती जाती हैं और कठिनता सुगमता में बदल जाती है।

(ख) भाषा-बोध

1) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पति	पत्नी	बेटा	बेटी
युवक	युवती	बच्चा	बच्ची
वर	वधू	मज़दूर	मज़दूरिन

2) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए।

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अबोध	अ	बोध	अप्रवासी	अ	प्रवासी
असहाय	अ	सहाय	विलंब	वि	लंब
अदृश्य	अ	दृश्य	विलीन	वि	लीन
असुरक्षा	अ	सुरक्षा	विमान	वि	मान

3) निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मेहमानदारी	मेहमान	दारी	नियमित	नियम	इत
भारतीय	भारत	ईय	आसानी	आसान	ई
स्वाभाविक	स्वभाव	इक	आवश्यकता	आवश्यक	ता

4) निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
ब्याह	विवाह	घर	गृह
बूढ़ा	वृद्ध	पाँव	पाद
भाई	भ्राता	आज	अद्य
हाथ	हस्त	दो	द्वि
रात	रात्रि	मुख	मुँह

पाठ - 11 वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी ..... (गोविंद कुमार 'गुंजन')

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक- दो पंक्तियों में दीजिए-

i) बाज़ार में अलार्म घड़ियों की माँग क्यों घटने लगी है?

उत्तर- मोबाइल फ़ोन में अलार्म उपलब्ध रहने से बाज़ार में अलार्म घड़ियों की माँग घटने लगी है।

ii) लेखक को कॉलेज में पुरस्कार में कौन-सी घड़ी मिली थी?

उत्तर- लेखक को कॉलेज में पुरस्कार में अलार्म घड़ी मिली थी।

iii) लेखक को कविताओं में डूबे रहना कैसा लगता था?

उत्तर- लेखक को कविताओं में डूबे रहना स्वर्ग जैसा लगता था।

iv) चिड़िया कमरे में दीवार पर लगी किसकी तस्वीर के पीछे अपना घोंसला बनाने लगी थी?

उत्तर- चिड़िया कमरे में दीवार पर लगी सुमित्रानंदन पंत जी की तस्वीर के पीछे अपना घोंसला बनाने लगी थी।

v) लेखक अपनी कौन-सी दुनिया में खोया रहता था कि चिड़िया की तरफ़ ध्यान ही नहीं देता था?

उत्तर - लेखक अपनी किताबों की दुनिया में खोया रहने की वजह से चिड़िया की तरफ ध्यान ही नहीं देता था।

vi) लेखक के लिए अलार्म घड़ी कौन थी?

उत्तर- लेखक के लिए अलार्म घड़ी चिड़िया थी।

vii) चिड़िया ने लेखक को कौन-सा रत्न दिया था?

उत्तर- चिड़िया ने लेखक को 'उषा सुंदरी' नामक रत्न दिया था।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन- चार पंक्तियां में दीजिए-

i) पहले किन-किन अवसरों पर घड़ी देने की परंपरा थी?

उत्तर- पहले कलाई पर घड़ी एक उपहार हुआ करती थी। परीक्षा में पास होने पर और कॉलेज में दाखिला होने पर बच्चों को दिलवाई जाती थी, तो शादी में दूल्हे को ससुराल पक्ष वाले घड़ी अवश्य देते थे। कई सरकारी विभागों में सेवा-निवृत्ति पर भी घड़ी देने की परंपरा थी।

ii) जिन दिनों लेखक के पास घड़ी नहीं थी तब उनके पिताजी क्या कहा करते थे?

उत्तर- जिन दिनों लेखक के पास कोई घड़ी नहीं थी, तब उनके पिता जी कहा करते थे कि तुम्हें सुबह कितने बजे भी उठना हो, तुम अपने तकिये से कहकर सो जाओ कि सुबह मुझे इतने बजे उठा देना। बस, फिर तुम्हारी नींद सुबह उतने ही बजे खुल जाएगी। बचपन में कितनी ही बार इस फ़ार्मूले को लेखक ने अपनाया था और सही पाया था।

iii) शाम को चिड़िया लेखक के कमरे में कैसे पधार जाती थी?

उत्तर- शाम को देर तक लेखक के कमरे का दरवाज़ा खुला रहता था। लेखक अपनी किताबों की दुनिया में खोया कभी उसकी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता था। लेखक के किताबों में रमे होने के कारण चिड़िया कमरे में पधार जाती थी।

iv) रोज़ सुबह-सुबह चिड़िया लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर चहचहाती क्यों थी?

उत्तर- रोज़ सुबह-सुबह चिड़िया लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर इसलिए चहचहाती थी क्योंकि उसने कमरे से बाहर जाना होता था। कमरे में कोई रोशनदान या खिड़की न होने की वजह से उसे लेखक के द्वारा दरवाज़ा खोलने तक का इंतज़ार करना पड़ता था। लेखक देर रात तक पढ़ने-लिखने के कारण जल्दी नहीं उठता था। इसलिए वह लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर चहचहाती थी।

v) लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से क्यों की है?

उत्तर- लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से इसलिए की है क्योंकि उस सुबह चिड़िया ने लेखक की रजाई का कोना अपनी चोंच से खींचकर अपनी चहचहाहट से लेखक को जगाया था। बचपन में इतने ही प्यार और इतनी ही झुँझलाहट से देर तक सोने पर लेखक को उसकी माँ जगाया करती थी। लेखक को चिड़िया द्वारा स्वयं को जगाना माँ की तरह जगाना लग रहा था। इसलिए लेखक ने चिड़िया की तुलना माँ से की है।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के छह-सात पंक्तियों में दीजिए:-

i) 'वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी' कहानी के द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- 'वह चिड़िया एक अलार्म घड़ी थी' कहानी में लेखक ने मनुष्य की आदत पर प्रकाश डाला है। ऐसा कहते हैं कि मनुष्य की आदत कभी नहीं बदलती लेकिन कभी-कभी किसी दूसरे के कारण बदल जाती है। लेखक देर तक सोए रहने की आदत से मजबूर था उसे एक छोटी-सी चिड़िया जगाती है। सुबह की ताज़ी हवा के स्पर्श का अहसास दिलाती है और उसे सुबह उठने की आदत डाल देती है।

ii) चिड़िया द्वारा लेखक को जगाए जाने के प्रयास को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- चिड़िया हर रोज़ शाम को लेखक के कमरे में खिड़कियाँ, रोशनदान न होने के बावजूद भी आराम से पधार जाती थी और वहाँ पर बनाए अपने घोंसले में आराम करती थी। लेखक देर रात तक पढ़ाई-लिखाई करने के कारण सुबह देर से उठता था लेकिन चिड़िया को सुबह जल्दी कमरे से बाहर जाना होता था। इसलिए वह लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर एक अलग तरह की झुँझलाहट से भरी चीं-चीं करती थी ताकि लेखक उठ जाए। कभी-कभी चिड़िया लेखक की रजाई का कोना अपनी चोंच से खींच कर अपनी चहचहाहट से उसे जगाती थी। वह उसे इतने प्यार और झुँझलाहट से जगाती थी जैसे लेखक की माँ जगाती थी। चिड़िया को सुबह कमरे से बाहर जाना होता था। वह जल्दी जाग जाती और दरवाज़ा खुलवाने के लिए लेखक के पलंग के सिरहाने बैठकर चहचहाती जिससे लेखक की नींद खुल जाती थी।

iii) लेखक उस वात्सल्यमयी चिड़िया का उपकार क्यों मानता है?

उत्तर - चिड़िया पलंग के सिरहाने या लेखक की रजाई पर बैठकर मधुर चहचहाहट से लेखक को जगाती थी। उसके चहचहाहट में अब वह झुँझलाहट नहीं, एक वात्सल्य भरी जागृति लेखक को महसूस होती थी। यह किसी घड़ी की यांत्रिक ध्वनि नहीं थी, अपनेपन से भरी पुकार थी, जो लेखक को आसमान से अवतरित होती हुई प्रात: काल की सुमंगल घड़ी में पुकारती थी। उस सुमंगल घड़ी में सरिताओं का जल, आकाश की वायु, सूर्य का प्रकाश- सब अपनी निर्मलता के चरम पर पहुँचकर सृष्टि में नए फूल खिलाने का उपक्रम करते हैं। लेखक चिड़िया के साथ जगना सीख गया था और सुबह की फूलों की सुगंध से भरी ताज़गी का वरदान पाने लगा था। चिड़िया ने लेखक को भी उषा सुंदरी के रत्न दिखा दिए थे। लेखक उस वात्सल्यमयी चिड़िया के उस उपकार को बहुत कृतज्ञता से महसूस करता है। उसने लेखक को उस घड़ी जगना सिखाया, जब धरती ओस के मोती बिखरा कर हर नए खिल रहे फूल का अभिनंदन कर रही होती है।

(ख) भाषा - बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए-

एकवचन	-	बहुवचन	एकवचन	-	बहुवचन
घोंसला	-	घोंसले	चिड़िया	-	चिड़ियाँ
कमरा	-	कमरे	डिबिया	-	डिबियाँ
दरवाज़ा	-	दरवाज़े	घड़ी	-	घड़ियाँ
बच्चा	-	बच्चे	खिड़की	-	खिड़कियाँ
दूल्हा	-	दूल्हे	छुट्टी	-	छुट्टियाँ

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
उपहार	उप	हार	अभिभूत	अभि	भूत
उपस्थित	उप	स्थित	सुमंगल	सु	मंगल
उपलब्ध	उप	लब्ध	अनुभूति	अनु	भूति
उपकार	उप	कार	बेख़बर	बे	ख़बर

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
चहचहाहट	चहचह	आहट	कृतज्ञता	कृतज्ञ	ता
झुँझलाहट	झुँझला	आहट	सघनता	सघन	ता
रोशनदान	रोशन	दान	मानवीय	मानव	ईय

4. पाठ में आए निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप तथा तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

तत्सम	-	तद्भव	तद्भव	-	तत्सम
रात्रि	-	रात	सच	-	सत्य
आश्रय	-	आसरा	नींद	-	निद्रा
कृपा	-	किरपा	मोती	-	मुक्ता
गृह	-	घर	चिड़िया	-	खग
सूर्य	-	सूरज	माँ	-	मातृ

पाठ -12 नींव की ईंट

(क) विषय बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न : (1) 'नींव की ईंट' पाठ के आधार पर बतायें कि दुनिया क्या देखती है?

उत्तर : दुनिया नींव की ईंट की अपेक्षा इमारत की चमक-दमक देखती है। ऊपरी आवरण की चमक-दमक ही देखना पसन्द करती है।

प्रश्न : (2) इमारत का होना न होना किस बात पर निर्भर करता है?

उत्तर : इमारत का होना न होना नींव की पहली ईंट पर निर्भर करता है। यदि नींव मज़बूत होगी तो इमारत भी मज़बूत बन पाएगी।

प्रश्न : (3) लेखक ने नींव की ईंट किसे बताया है?

उत्तर : जो ईंट ज़मीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ती है और इमारत की पहली ईंट बनती है। इसी ईंट पर इमारत की मज़बूती तथा होना न होना निर्भर करता है। लेखक ने इसे ही नींव की ईंट कहा है।

प्रश्न : (4) नींव की ईंट ने अपना अस्तित्व क्यों विलीन कर दिया?

उत्तर : नींव की ईंट ने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया ताकि इमारत मज़बूत और सुंदर बन सके और यह संसार एक सुंदर सृष्टि देख सके।

प्रश्न : (5) ईसा की शहादत ने किस धर्म को अमर बना दिया?

उत्तर : ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया।

प्रश्न : (6) किसकी हड्डियों के दान से वृत्रासुर का नाश हुआ?

उत्तर : महर्षि दधीचि की हड्डियों के दान से वृत्रासुर का नाश हुआ ।

प्रश्न : (7) लेखक के अनुसार सत्य की प्राप्ति कब होती है?

उत्तर : लेखक के अनुसार कठोरता और भद्देपन दोनों का सामना करने से सत्य की प्राप्ति होती है। किसी भी इमारत का सत्य उस की नींव की ईंट होती है।

प्रश्न : (8) पाठ में लेखक ने 'दधीचि' और 'वृत्रासुर' शब्द किसके लिए प्रयोग किए हैं?

उत्तर : पाठ में लेखक ने 'दधीचि' शब्द शहीदों तथा 'वृत्रासुर' विदेशी आक्रमणकारियों के लिए प्रयोग किए हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न : (1) नींव की ईंट और कँगूरे की ईंट दोनों क्यों वन्दनीय हैं?

उत्तर : नींव की ईंट इसलिए वन्दनीय है क्योंकि यह ईंट ज़मीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई है और इमारत की पहली ईंट बनी है। दूसरा कँगूरे की ईंट इसलिए वन्दनीय है क्यों कि यह कट - छंटकर कँगूरे पर चढ़ती है और इमारत की शोभा बनाती है। इसलिए दोनों वन्दनीय हैं।

प्रश्न : (2) नींव की ईंट पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : पाठ के आधार पर 'सत्य' सदा शिवम होता है किंतु वह हमेशा 'सुंदरम' भी हो यह आवश्यक नहीं। सत्य कठोर होता है। कठोरता और भद्दापन साथ साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं। हम कठोरता से भागते हैं भद्देपन से मुख मोड़ते हैं इसलिए सत्य से भी भागते हैं।

प्रश्न : (3) देश को आज़ाद करवाने में किन लोगों का योगदान रहा? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : देश को आज़ाद करवाने में अनेक लोगों का योगदान रहा। यह केवल उन लोगों के बलिदान से ही आज़ाद नहीं हुआ जिनका नाम इतिहास में लिखा है। इसमें उनका भी योगदान है जिन्होंने चुपचाप देश सेवा की और देश के लिए अपना बलिदान दे दिया और आज़ादी की नींव की ईंट बने।

प्रश्न : (4) आजकल के नौजवानों में कँगूरा बनने की होड़ क्यों मची हुई है?

उत्तर : आजकल के नौजवानों में कँगूरा बनने की होड़ इसलिए मची हुई है क्योंकि उनमें नींव की ईंट बनने की इच्छा नहीं रही। उनमें देशभक्ति, बलिदान तथा त्याग की कामना खो गई है। केवल बाहरी दिखावे के प्रतीक बनना चाहते हैं। केवल यश और सुख प्राप्त करना ही उनका उद्देश्य है।

प्रश्न : (5) नये समाज के निर्माण के लिए किस चीज़ की आवश्यकता होती है?

उत्तर : नये समाज के निर्माण के लिए नींव की ईंट बनने की इच्छा रखने वाले लोगों की आवश्यकता है। ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो समाज के नवनिर्माण के लिए अपना बलिदान देकर नींव की ईंट बनें । जो शाबाशियों से दूर हों और दलबंदियों से अलग हों । जिनमें कँगूरा बनने की कामना न हो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः सात वाक्यों में दीजिए:-

प्रश्न : (1) नींव की ईंट पाठ के आधार पर बताएँ कि समाज की आधारशिला क्या होती है?

उत्तर : शहादत और मौन-मूक सेवा ही समाज की आधारशिला होती है। जिस शहादत को समाज में ख्याति तथा जिस बलिदान को अधिक प्रसिद्धि मिल जाती है वह समाज की आधारशिला नहीं होती। वह तो केवल इमारत की कँगूरा अथवा मंदिर के कलश के समान हो सकती है। वह नींव की ईंट कभी नहीं होती। वास्तव में समाज की आधारशिला वही लोग बनते हैं जो चुपचाप अपना बलिदान एवं त्याग कर देते हैं और जिन्हें कोई नहीं जानता।

प्रश्न : (2) आज देश को कैसे नौजवानों की ज़रूरत है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : आज देश को ऐसे नौजवानों की ज़रूरत है जो अपने देश पर चुपचाप अपना बलिदान एवं त्याग कर दें। जो एक नई प्रेरणा से प्रेरित हों। उनमें एक नई चेतना का भाव हो जिन्हें किसी की शाबाशी की ज़रूरत न हो। जिनमें न तो कँगूरा बनने की इच्छा हो और न ही कलश कहलाने की इच्छा हो। वे सभी इच्छाओं एवं आशाओं से बिल्कुल दूर हों।

निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए:-

1. सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन - मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय है कि समाज का सुंदर निर्माण होना चाहिए। इसके लिए समाज के कुछ अग्रणी लोगों को चुपचाप किसी प्रसिद्धि से मुक्त होकर अपना बलिदान एवं त्याग करना होगा। इसमें कवि ने चुपचाप बलिदान देने की प्रेरणा दी है।

2. हम जिसे देख नहीं सके, वह सत्य नहीं है, यह है मूढ़ धारणा। ढूँढने से ही सत्य मिलता है। ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना ही हमारा काम है, हमारा धर्म है।

उत्तर- इसका आशय यह है कि हम जिसको देख नहीं सके वह बिल्कुल सत्य नहीं है। यह एक मूर्ख धारणा है। इसमें सत्य की प्राप्ति नहीं होती। सत्य तो केवल ढूँढने से ही मिलता है। हमें कँगूरे की तरफ नहीं बल्कि इमारत की नींव की ईंटों की तरफ ध्यान देना चाहिए। यही हमारा कर्म है और यही धर्म है।

3. उदय के लिए आतुर समाज चिल्ला रहा है - हमारी नींव की ईंट किधर है? देश के नौजवानों को यह चुनौती है।

उत्तर- इसमें लेखक ने नौजवानों में समाज के प्रति कर्तव्य हीन भावना की ओर संकेत किया है। आज समाज उन्नति के लिए नौजवानों का इंतज़ार कर रहा है किंतु कोई उन्नति एवं उदय की आधारशिला बनने को तैयार नहीं है। देश के नौजवानों के लिए चुनौती है।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

उपसर्ग	शब्द	मूल शब्द	उपसर्ग	शब्द	मूल शब्द
आवरण	आ	वरण	प्रसिद्धि	प्र	सिद्धि
प्रताप	प्र	ताप	अभिभूत	अभि	भूत
प्रचार	प्र	चार	अनुप्राणित	अनु	प्राणित
बेतहाशा	बे	तहाशा	आकृष्ट	आ	कृष्ट

2. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मज़बूती	मज़बूत	ई	चमकीली	चमक	ईली
भद्दापन	भद्दा	पन	पुख़्तापन	पुख़्ता	पन
पायदारी	पाय	दारी	कारखाना	कार	खाना
विदेशी	विदेश	ई	सुनहली	सुनहल	ई

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझ कर उन्हें वाक्य में प्रयुक्त कीजिए-

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
नींव की ईंट बनना	**(काम का आधार बनना)**	महान व्यक्ति हमेशा समाज की नींव की ईंट बनते हैं।
शहादत का लाल	**(बलिदान देने वाला व्यक्ति)**	देश के शहादत के लालों को कभी नहीं भूलना चाहिए।
सेहरा पहनना	**(सर्वस्व बलिदान देना)**	हमारी सेना के वीर सिपाही देश की रक्षा के लिए सदा सेहरा पहनने के लिए तत्पर रहते हैं।
खाक छानना	**(मारा-मारा फिरना)**	पिता अपने खोए हुए पुत्र के लिए पूरे देश में खाक छानता फिरा।
फलना फूलना	**(सुखी व सम्पन्न होना)**	देशभक्तों के बलिदान के कारण ही समाज फलता-फूलता है।
खपा देना	**(किसी काम में लग जाना)**	देश के विकास के लिए ऐसे नौजवानों की आवश्यकता है जो अपने आप को खपा देने के लिए तैयार हों।

निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए-

1. कँगूरे के गीत गाने वाले हम आइए अब नींव के गीत गाएँ।

उत्तर- कँगूरे के गीत गाने वाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

2. हाँ शहादत और मौन-मूक समाज की आधारशिला यही होती है।

उत्तर- हाँ, शहादत और मौन-मूक! समाज की आधारशिला यही होती है।

3. अफसोस कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

उत्तर- अफसोस, कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईट ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

4. हमारी नींव की ईंट किधर है

उत्तर- हमारी नींव की ईट किधर है?

पाठ - 13 हिम्मत और ज़िंदगी

क) विषय-बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1. सुख का स्वाद किन लोगों को अधिक प्राप्त है?

उत्तर : सुख का स्वाद उन लोगों को अधिक प्राप्त होता है जो सुख का मूल्य पहले चुकाते हैं।

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार किन लोगों के लिए आराम ही मौत है?

उत्तर : जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है उन लोगों के लिए आराम ही मौत है।

प्रश्न 3. 'त्यक्तेन भुंजीथाः' का क्या अर्थ है?

उत्तर : जीवन का भोग त्याग के साथ करो।

प्रश्न 4. अकबर ने कितने वर्ष की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को हराया था?

उत्तर : अकबर ने तेरह वर्ष की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को हराया था।

प्रश्न 5. महाभारत का युद्ध किन-किन के मध्य हुआ था?

उत्तर : महाभारत का युद्ध कौरवों और पाण्डवों के मध्य हुआ था।

प्रश्न 6. महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की जीत का क्या कारण था?

उत्तर : महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की जीत इसलिए हुई क्योंकि उन्होंने लाक्षाग्रह की मुसीबत झेली थी और बनवास का संकट झेला था। उन्होंने कौरवों के द्वारा दिए गए कष्टों को झेला था।

प्रश्न 7.साहसी व्यक्ति की पहली पहचान क्या है ?

उत्तर : (1) साहसी व्यक्ति तमाशा देखने वालों की चिंता नहीं करता।

(2) वह उन सपनों में भी रस लेता है जिनके कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं होते।

प्रश्न 8. लेखक के अनुसार साधारण जीव कौन-से लोग हैं?

उत्तर : जो आस-पड़ोस को देखकर चलते हैं वे साधारण जीव होते हैं।

प्रश्न 9. लेखक ने किन्हें क्राँति करने वाले लोग कहा है?

उत्तर : जो लोग अपने उद्देश्य की तुलना पड़ोसी के उद्देश्य से नहीं करते।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार नींद तथा भोजन का वास्तविक आनन्द किन्हें मिलता है?

उत्तर : नींद का वास्तविक आनंद उन्हें मिलता है जो दिनभर धूप में थक कर वापस लौटता है तथा भोजन का आनंद उन्हें मिलता है जो कुछ दिन बिना खाये भी रह सकता है।

प्रश्न 2. जीवन में असफलताएँ मिलने पर भी साहसी मनुष्य क्या करता है?

उत्तर: साहसी मनुष्य असफलताओं से घबराता नहीं। उनका साहस के साथ मुकाबला करता है और आगे ही आगे बढ़ता रहता है।

प्रश्न 3. महान निश्चय व बड़े मौके पर कायरता दिखाने वाले व्यक्ति का जीवन कैसा होता है?

उत्तर : जो व्यक्ति महान निश्चय और किसी बड़े मौके पर कायरता दिखाता है, वह कभी भी सुखी नहीं रहता। तभी उसकी आत्मा उसे फटकारती रहती है।

प्रश्न 4. ज़िंदगी में जोखिम से बचने के कारण क्या हानि होती है?

उत्तर : ज़िंदगी में जोखिम से बचने के कारण निम्नलिखित हानि होती है:-

(1) वह अपने ही जीवन के व्यर्थ फ़ेरों के बीच कैद हो जाता है।

(2) उसे ज़िंदगी का कोई मज़ा नहीं मिलता।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः या सात पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न 1. साहसी व्यक्ति के कोई पाँच गुण लिखिए।

उत्तर : साहसी व्यक्ति के गुण इस प्रकार हैं:-

(1) साहसी व्यक्ति इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।

(2) वह उन सपनों में भी रस लेता है जिनका कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं होता।

(3) वह कभी भी सपने उधार नहीं लेता।

(4) वह सदा अकेला ही अपनी राह पर चलता है।

(5) वह कठिनाइयों से नहीं डरता।

(6) वह पूर्ण रूप से निडर होता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए :

(i) जो लोग पाँव भीगने के ख़ौफ़ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आयेंगे।

उत्तर : लेखक कहता है कि इस संसार में जिन लोगों को अपने पाँव भीगने का डर होता है उन्हें ही समुद्र में डूबने का खतरा होता है अर्थात् जो लोग कठिन परिस्थितियों को देखकर डर जाते हैं और उनसे संघर्ष नहीं करते वे जीवन में कभी भी सफल नहीं होते। डरपोक लोगों को असफलता ही मिलती है। किंतु जिन लोगों को लहरों में तैरने का अभ्यास होता है अर्थात् जो परिस्थितियों का निडर और साहसी बनकर सामना करते हैं उन्हें ही सफलता मिलती है वे लोग ही समुद्र से मोती निकाल सकते हैं।

(ii) अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

उत्तर : लेखक आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है कि यदि जीवन में रास्ता आगे की तरफ निकलता है तो आंतरिक आनंद आगे बढ़ते जाने में ही है। भाव है कि यदि जीवन में आगे की तरफ कोई रास्ता निकलता हो तो हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए। उस रास्ते पर आगे बढ़ने से ही असली आनंद प्राप्त होगा।

(iii) अरे ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों में ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?

उत्तर:लेखक जीवन के साधकों को संबोधित कर उन्हें प्रेरणा देता है कि, हे जीवन के साधको! यदि तुम्हें किनारे पर मरी हुई सीपियों में ही संतोष मिल जाए तो समुद्र के बीच में छिपे हुए मोतियों के खजाने को कौन बाहर निकालेगा। भाव यह है कि तुम्हें केवल सीपियों से ही संतोष नहीं करना चाहिए बल्कि कठिन परिश्रम करते हुए समुद्र के बीच जाकर मोतियों का खजाना ढूंढ़कर लाना चाहिए।

(iv) कामना का अंचल छोटा मत करो। जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

उत्तर: लेखक साधकों को प्रेरणा दे रहा है कि हे साधको ! तुम अपनी इच्छाओं के आँचल को छोटा मत करो। तुम अपनी जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो। इसमें से रस की नदी तुम्हारे द्वारा भी बह सकती है। भाव यह है कि यदि तुम मेहनत करो और अपनी इच्छाएँ बड़ी रखो तो तुम्हें अवश्य फल की प्राप्ति होगी।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए:-

तत्सम	**-**	**तद्भव**	**तत्सम**	**-**	**तद्भव**
पुष्प	-	फूल	रात्रि	-	रात
ओष्ठ	-	होंठ	गृह	-	घर
मृत्यु	-	मौत	लाक्षा	-	लाख
हस्त	-	हाथ	कर्म	-	काम

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए:-

1. पाँव बढ़ाना - (चाल तेज़ करना, जल्दी-जल्दी चलना, आगे बढ़ना)

वाक्य - हमें सदा सफलता की ओर पाँव बढ़ाना चाहिए।

2. दाँव पर लगाना - (कोई वस्तु बाज़ी पर लगाना)

वाक्य - युधिष्ठिर ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था।

3. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए:-

रेगीस्तान, सन्तुश्ट, आतमा, ज़रुरत, अवाज़, सवाद, खुशबुदार, संजम, चुनोती, निरझरी

अशुद्ध	**-**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**-**	**शुद्ध**
रेगीस्तान	-	रेगिस्तान	सवाद	-	स्वाद
सन्तुश्ट	-	संतुष्ट	खुशबुदार	-	खुश्बूदार
आतमा	-	आत्मा	संजम	-	संयम
ज़रुरत	-	ज़रूरत	चुनोती	-	चुनौती
अवाज़	-	आवाज़	निरझरी	-	निर्झरी

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही विराम चिह्न लगाइए:-

1. झुंड में चरना यह भैंस और भेड़ का काम है

उत्तर: झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है।

2. यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है तुम साहस नहीं दिखा सके तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए

उत्तर: यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है, "तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।"

3. अरे ओ जीवन के साधको तुम निचली डाल का फल तोड़कर लौटे जा रहे हो तो फिर फुनगी का वह लाल आम किसके वास्ते है

उत्तर- अरे ओ जीवन के साधको ! तुम निचली डाल का फल तोड़कर लौटे जा रहे हो, तो फिर फुनगी का वह लाल आम किसके वास्ते है?

पाठ 14 महान राष्ट्र भक्त: मदन लाल ढींगरा

विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1. मदन लाल ढींगरा का जन्म कब हुआ?

उत्तर : मदन लाल ढींगरा का जन्म सन् 18 सितंबर 1883 ई. को हुआ था।

प्रश्न 2. मदन लाल ढींगरा को लाहौर कॉलेज की पढ़ाई क्यों छोड़नी पड़ी?

उत्तर : मदन लाल ढींगरा को अपनी देशभक्ति की भावना के कारण लाहौर कॉलेज की पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

प्रश्न 3. कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर उन्होंने अपना गुज़ारा कैसे किया?

उत्तर : कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के बाद उन्होंने अपना गुज़ारा करने के लिए कारखाने में नौकरी की। रिक्शा और टाँगा भी चलाया।

प्रश्न 4. वे इंग्लैंड में कौन सी पढ़ाई करने गए थे?

उत्तर : वे इंग्लैंड में मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने गए थे।

प्रश्न 5. मदनलाल ढींगरा किस क्रांतिकारी संस्था के सदस्य बने?

उत्तर : मदनलाल ढींगरा 'अभिनव भारत' क्रांतिकारी संस्था के सदस्य बने ।

प्रश्न 6. कर्ज़न वायली कौन था?

उत्तर : कर्ज़न वायली स्टेट ऑफ इंडिया का सचिव सलाहकार था।

प्रश्न 7. मदनलाल ढींगरा को फाँसी की सज़ा कब दी गई?

उत्तर : मदनलाल ढींगरा को 17 अगस्त सन् 1909 ई. को फाँसी की सज़ा दी गई।

प्रश्न 8. शहीद मदनलाल लाल ढींगरा की अस्थियाँ भारत भूमि कब लाई गयीं?

उत्तर : मदनलाल ढींगरा की अस्थियाँ 13 दिसंबर सन् 1976 ई. को भारत भूमि लाई गयीं ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1. मदनलाल ढींगरा ने अंग्रेज़ों से बदला लेने की क्यों ठानी ?

उत्तर : मदनलाल ढींगरा ने अंग्रेज़ों से बदला लेने की इसलिए ठानी क्योंकि अंग्रेज़ों ने खुदीराम बोस, कन्हैयालाल दत्त, सतिंदर पाल और कांशी राम जैसे क्रांतिकारियों को मृत्युदंड दे दिया था। इन घटनाओं ने मदनलाल ढींगरा के मन में **अंग्रेज़ों** के प्रति नफरत पैदा कर दी थी। तभी से उसने **अंग्रेज़ों** से बदला लेने की ठानी।

प्रश्न 2. कर्ज़न वायली को मदन लाल ढींगरा ने क्यों मारा?

उत्तर : कर्ज़न वायली को मदन लाल ढींगरा ने इसलिए मारा क्योंकि उनका मानना था कि ऐसे नीच अधिकारियों ने हज़ारों भारतीयों को केवल गुलाम ही नहीं बनाया बल्कि बिना किसी कारण के मौत के घाट उतारा है। इसलिए उन्होंने अपनी जेब से पिस्टल निकाली और 7 गोलियों से कर्ज़न वायली को वहीं ढेर कर दिया।

प्रश्न 3. मदन लाल ढींगरा की शहादत पर लाला हरदयाल ने क्या कहा था?

उत्तर : मदन लाल ढींगरा की शहादत पर लाला हरदयाल ने कहा था कि ढींगरा की शहीदी उन राजपूतों और सिक्खों की कुर्बानियों का स्मृति पुंज है जिसके कारण शहादत अमर बन जाती है। **अंग्रेज़** सोचते होंगे कि उन्होंने मदनलाल ढींगरा को फाँसी देकर सदा के लिए स्वतंत्रता की आवाज़ को दबा दिया है परंतु वास्तविकता यह है कि यही आवाज़ भारत को स्वतंत्र बनाएगी।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छ: या सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. शहीद मदन लाल ढींगरा एक सच्चे देशभक्त थे। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मदन लाल ढींगरा भारतवर्ष के उन महान शहीदों में से एक थे जिन्होंने देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपने प्राण हँसते-हँसते न्योछावर कर दिए। मदन लाल ढींगरा एक साहसी एवं निडर देशभक्त थे। वे शुरू से ही स्वतंत्रता प्रेमी थे। देशभक्ति के कारण उन्हें लाहौर कॉलेज छोड़ना पड़ा। इंग्लैंड में जाकर भी उन्होंने पढ़ाई के साथ साथ ब्रिटेन में चल रही स्वतंत्रता प्राप्ति की गतिविधियों में निडरतापूर्वक भाग लिया था। वे वहाँ पर 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संस्था के सदस्य बने रहे। उन्होंने बंग-

भंग आंदोलन के समय लंदन की गलियों में वंदे मातरम् गुंजाया। अपनी कमीज़ के ऊपर वंदे मातरम् लिखकर लंदन के बाज़ारों में घूमते थे। अपनी हर पुस्तक पर वे नाम न लिखकर वंदे मातरम् लिखते थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शहीद मदन लाल ढींगरा एक सच्चे देशभक्त थे।

प्रश्न 2. आपको शहीद मदन लाल ढींगरा के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर : भारतवर्ष के जिन वीर सपूतों ने देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपने जीवन को बलिदान कर दिया, उनमें मदन लाल ढींगरा का नाम भी प्रमुख है। मदन लाल ढींगरा ने निःस्वार्थ भाव से देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम अपने देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा करें और देश व समाज के विकास के लिए ईमानदारी से अथक परिश्रम करें। जिस प्रकार मदन लाल ढींगरा ने ब्रिटिश साम्राज्य को न्यायालय में ललकारते हुए कहा था कि अंग्रेज़ो को भारतीयों को गुलाम बनाने का कोई हक नहीं है। उसी प्रकार हमें भी देश की सीमाओं पर हो रहे प्रहारों का निडरतापूर्वक मुकाबला करना चाहिए। हमें अपने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देना चाहिए। हमें आत्मविश्वास, निडरता एवं साहस के साथ मुसीबतों का सामना करना चाहिए। हमें अपने राष्ट्र की सच्ची पूजा करनी चाहिए और देश की एकता को बनाए रखना चाहिए।

(ख) भाषा-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखें:-

अशुद्ध - शुद्ध	**अशुद्ध - शुद्ध**	**अशुद्ध - शुद्ध**
शरेय - श्रेय	आतमविश्वास - आत्मविश्वास	कालज - कॉलेज
देशभगती - देशभक्ति	यांतरिकी - यांत्रिकी	अध्यन - अध्ययन
गोर्वान्वित - गौरवान्वित	परशिक्शण - प्रशिक्षण	क्रांतीकारी - क्रांतिकारी
सथापना - स्थापना	मृत्यूदंड - मृत्युदंड	हजार - हज़ार
आजादी - आज़ादी	मातरिभुमि - मातृभूमि	स्मरिति - स्मृति
लवारिस - लावारिस	अस्थीयाँ - अस्थियाँ	प्रापत - प्राप्त

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझ कर उनका वाक्यों में प्रयोग करें :-

1. तर्क के तराजू में तोलना (सोच समझ कर फैसला लेना) मदनलाल ढींगरा हर बात को तर्क के तराजू में तोल कर देखते थे।

2. रंग में रंग जाना (प्रभाव पड़ना) स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन देश भक्ति के रंग में रंगा हुआ था।

3. मौत के घाट उतारना (मार डालना) मदन लाल ढींगरा ने कर्ज़न वायली को मौत के घाट उतार दिया।

4. ढेर करना (मार गिराना) सैनिकों ने दुश्मनों को ढेर कर दिया।

5. आवाज को दबाना (चुप कराना) साहसी व्यक्ति की आवाज़ को कोई नहीं दबा सकता।

पाठ – 15 एक अंतहीन चक्रव्यूह

क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. नशे के चक्रव्यूह में फँसा आदमी क्या कुछ लुटा देता है?

उत्तर : नशे के चक्रव्यूह में फँसा आदमी अपना तन-मन-धन सब कुछ लुटा देता है।

प्रश्न 2. व्यसन या ड्रग एडिक्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : जब आदमी का मन और शरीर दोनों नशे के गुलाम बन जाते हैं और वह नशे के बिना नहीं रहता तो इसे व्यसन कहते हैं।

प्रश्न 3. नशे के अंतहीन चक्रव्यूह में कौन फँस जाता है?

उत्तर : मन का सन्तुलन खोजता आदमी नशे के अंतहीन चक्रव्यूह में फँस जाता है।

प्रश्न 4. कोकेन के सेवन से क्या नुकसान होता है?

उत्तर : कोकेन के सेवन से त्वचा के नीचे असंख्य कीड़े रेंगने का आभास होता है।

प्रश्न 5. नशा करने से पारिवारिक व सामाजिक जीवन पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर : नशा करने से पारिवारिक व सामाजिक जीवन नष्ट हो जाता है। अपनों का प्यार और साथ खो जाता है। वह दुनिया में अकेला रह जाता है।

प्रश्न 6. नशा करने से आर्थिक जीवन पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर : नशा करने से आर्थिक समस्याएँ दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं।

प्रश्न 7. कौन-कौन सी संस्थाएँ नशामुक्ति की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं?

उत्तर : सरकारी, गैर-सरकारी संगठन, अस्पताल, पुलिस तथा स्वयंसेवी संस्थाएँ नशामुक्ति की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1. नशे की भूल-भुलैया में लोग क्यों फँस जाते हैं?

उत्तर : नशे की भूल-भुलैया में लोग इसलिए फँस जाते हैं ताकि वे अपने जीवन की सच्चाइयों से मुँह मोड़ सकें।

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार किस तरह के लोग नशे के शिकार होते हैं?

उत्तर : लेखक के अनुसार कोई ग़म दूर करने, तो कोई शून्य, स्नेहरिक्त, जीवन में रस लाने के लिए, कोई उत्सुकतावश तो कोई फैशनेबल दिखने के लिए नशे के शिकार होते हैं।

प्रश्न 3. लोगों में नशे के बारे में किस तरह की ग़लतफहमी है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : लोगों में नशे के बारे में ग़लतफहमी है कि नशा कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता बढ़ाता है।

प्रश्न 4. नशा करने वाले व्यक्ति के स्वभाव में क्या परिवर्तन आ जाता है?

उत्तर : नशा करने वाले व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। उसे झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। उस पर आलस्य छा जाता है। वह शंकालु बन जाता है।

प्रश्न 5. नशा करने से कौन-कौन-सी भयंकर बीमारियाँ होती हैं?

उत्तर : नशा करने से एड्स, हेपेटाइटिस, वातस्फीति, दमा, खाँसी आदि भंयकर बीमारियाँ होती हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः या सात पंक्तियों में दीजिए :

प्रश्न 1. नशा करने का एक बार का अनुभव आगे चलकर व्यसन में बदल जाता है। कैसे?

उत्तर : नशे की शुरुआत आदमी अपने किसी दोस्त या साथी के कहे में आकर करता है। धीरे-धीरे उसका यह अनुभव व्यसन में बदल जाता है। वह इसका आदी बन जाता है। उसे नशे के बिना एक पल भी अच्छा नहीं लगता। नशा न मिलने पर वह छटपटाने लगता है। उसका शरीर और मन दोनों नशे के गुलाम बन जाते हैं।

प्रश्न 2. नशेड़ी व्यक्ति का जीवन अंतत: नीरस हो जाता है। कैसे?

उत्तर : नशेड़ी व्यक्ति के जीवन में कुछ भी शेष नहीं रहता। उसका शरीर ही नहीं बल्कि मन भी रोगों का शिकार बन जाता है। उसका सामाजिक संपर्क टूट जाता है। कोई उससे बात करना भी पसंद नहीं करता। न उसके पास धन रहता है और न यौवन। अनेक बीमारियाँ उसे घेर लेती हैं। इस प्रकार नशेड़ी व्यक्ति का जीवन नीरस बन जाता है।

प्रश्न 3. नशामुक्ति के क्या-क्या उपाय किए जाते हैं?

उत्तर : नशामुक्ति के लिए निम्न उपाय किए जाते हैं :-

(1) नशामुक्ति के लिए मनोरोग विशेषज्ञ से मदद ले सकते हैं।

(2) डॉक्टर नशे की खुराक को घटाते हुए देकर धीरे-धीरे बंद कर देते हैं।

(3) ऐसी दवाएँ दी जाती हैं जिससे तन-मन की छटपटाहट काबू हो जाती है।

(4) रोगी को अस्पताल भी भर्ती कर सकते हैं।

(5) अनेक संस्थाओं द्वारा मदद की जाती है।

(6) रोगी के मानसिक एवं सामाजिक पुनर्वास के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. अवसाद, तनाव, विफलता, हताशा आदि मन को कमज़ोर बनाने वाली स्थितियाँ भी नशे की ओर धकेल सकती हैं। मन का संतुलन खोजता आदमी एक अंतहीन चक्रव्यूह में फँस जाता है।

उत्तर : लेखक का कथन है कि यदि आदमी के जीवन में किसी प्रकार का दुःख, तनाव, असफलता आदि हो तो वे भी उसके मन को कमज़ोर बना देती हैं जिसके कारण आदमी नशे की ओर चला जाता है। वह नशा करने लगता है। वह इसमें अपने मन का संतुलन बनाना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे एक अंतहीन चक्रव्यूह में फँस जाता है।

2. किंतु अच्छाई इसी में है कि इस चक्रव्यूह से स्वयं को बिल्कुल आज़ाद ही रखें। कोई कुछ भी कहे, न तो नशों के साथ एक्सपेरिमेंट करना अच्छा है, न ऐसी संगत में रहना ठीक है जहाँ लोग उसके चंगुल में कैद हों।

उत्तर : लेखक नशे से बचने का सुझाव देता है कि अच्छाई इसी बात में है कि नशे के चक्रव्यूह से स्वयं को बिल्कुल स्वतन्त्र रखना चाहिए। हमें कभी भी नशे का शिकार नहीं होना चाहिए। चाहे कोई कुछ भी कहे न तो नशों के साथ परीक्षण करना अच्छा होता है और न ही ऐसी संगति में रहना जहाँ लोग उसके शिकार होते हैं।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
निर्बुद्धि	निर्	बुद्धि	बेरोज़गार	बे	रोज़गार
दुष्प्रभाव	दुः	प्रभाव	उत्खनन	उत्	खनन
बेचैन	बे	चैन	विवश	वि	वश

2. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
निर्भरता	निर्भर	ता	विफलता	विफल	ता
पुरातात्विक	पुरातत्व	इक	शारीरिक	शरीर	इक
मानसिक	मानस	इक	मनोवैज्ञानिक	मनोविज्ञान	इक
कल्पनाशीलता	कल्पनाशील	ता	सृजनात्मकता	सृजनात्मक	ता
चिकित्सीय	चिकित्सा	ईय	सरकारी	सरकार	ई

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए

• **मुँह मोड़ना** - (उपेक्षा करना, ध्यान न देना)

वाक्य - विद्यार्थियों को आलस्य से सदा मुँह मोड़ना चाहिए।

• **रग-रग में फैलना** - (सब जगह फैलना)

वाक्य - साँप का ज़हर किसान की रग-रग में अब तक फैल चुका होगा।

• **घर करना** - (मन में कोई बात बैठ जाना)

वाक्य - कवि को उस के पिता ने ऐसा समझाया कि यह बात उसके मन में घर कर गई है।

• **सुध न रहना** - (याद न रहना)

वाक्य - परीक्षा निकट आते ही विद्यार्थियों को खाने-पीने की भी सुध नहीं रहती।

• **ग़म ग़लत करना** - (दुःख भूलने के लिए नशा करना)

वाक्य - अरे ! मेहनत करो ग़म ग़लत करने से कुछ नहीं होगा।

• **नाता टूटना** - (सम्बन्ध ख़त्म हो जाना)

वाक्य - राम और श्याम का नाता टूट चुका है।

4. निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

1. ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਖੁਰਾਕ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਵੀ ਵਧਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

उत्तर: धीरे-धीरे खुराक की मात्रा भी बढ़ती जाती है।

2. ਨਸ਼ੇ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕਿਸੇ ਦੋਸਤ ਜਾਂ ਸਾਥੀ ਦੇ ਕਹਿਣ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

उत्तर : नशे की शुरुआत आमतौर पर किसी दोस्त या साथी के कहने में आ कर होती है।

3. ਨਸ਼ੇੜੀ ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਮਨ ਨਹੀਂ ਲਗਦਾ।

उत्तर : नशेड़ी व्यक्ति का किसी भी काम में मन नहीं लगता।

4. ਨਸ਼ੀਲੇ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੀ ਲਤ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਪਾਉਣਾ ਅਸਾਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

उत्तर : नशीले पदार्थों की आदत से मुक्ति पाना आसान नहीं होता।

5. ਨਸ਼ਿਆਂ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਖ਼ੁਦ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਅਜ਼ਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

उत्तर : नशों से हमें स्वयं को सदा आज़ाद रखना चाहिए।

पाठ – 16 बचेंद्री पाल

क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. बचेंद्रीपाल ने बचपन में क्या दृढ़ निश्चय कर लिया था?

उत्तर : बचेंद्री पाल ने बचपन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह परिवार में किसी से पीछे नहीं रहेगी।

प्रश्न 2. बचेंद्री पाल के माता-पिता किस बात से दुःखी थे?

उत्तर : बचेंद्री पाल के माता-पिता अपने बच्चों के सपनों की दुनिया से दुःखी थे।

प्रश्न 3. बचेंद्री पाल ने किन मैदानी खेलों में कप जीते?

उत्तर : बचेंद्री पाल ने गोला फेंक, डिस्क फेंक तथा लंबी दौड़ में कप जीते।

प्रश्न 4. बचेंद्री पाल ने कब अपने आपको पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह समर्पित किया?

उत्तर : बचेंद्री पाल ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने आपको पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह सममर्मित किया।

प्रश्न 5. 'रैपलिंग' का क्या अर्थ है?

उत्तर : रैपलिंग का अर्थ है-ऊँची चट्टान अथवा हिमखंड से एक नाइलोन की रस्सी के सहारे कुछ ही क्षणों में नीचे आना।

प्रश्न 6. बचेंद्री पाल और अंग दोरजी ने बर्फ काटने के लिए किस चीज़ का इस्तेमाल किया?

उत्तर : बचेंद्री पाल और अंग दोरजी के बर्फ काटने के लिए फावड़े का इस्तेमाल किया।

प्रश्न 7. एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला कौन है?

उत्तर : एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला बचेंद्री पाल है।

प्रश्न 8. एवरेस्ट पर आनन्द के क्षणों में बचेंद्री पाल को किन का ध्यान आया?

उत्तर : एवरेस्ट पर आनंद के क्षणों में बचेंद्री पाल को अपने माता-पिता का ध्यान आया।

प्रश्न 9. बचेंद्री पाल को कौन-कौन से पुरस्कार दिए गए ?

उत्तर : बचेंद्री पाल को पद्मश्री, अर्जुन पुरस्कार तथा प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक पुरस्कार दिए गए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए

प्रश्न 1. दस साल की आयु में ही बचेंद्री पाल निडर और स्वतंत्र कैसे बन गई थी?

उत्तर : दस साल की आयु में ही बचेंद्री पाल जंगलों और पहाड़ी ढलानों पर प्रायः अकेली घूमती थी। वह प्रकृति के साथ स्वंतत्र होकर खेलती थी। प्रकृति के साथ इस खुलाव से निडर तथा स्वतंत्र बन गई।

प्रश्न 2. बचेंद्री पाल प्रतियोगिताओं के शुरू होने से पहले ही कौन-कौन सी दौड़ का अभ्यास करना शुरू कर देती थी ?

उत्तर : बचेंद्री पाल प्रतियोगिताओं के शुरू होने से पहले ही तीन टँगड़ी दौड़, सूई धागे वाली दौड, बोरा दौड तथा सिर पर पानी भरा मटका रखकर होने वाली दौड़ आदि का अभ्यास करना शुरू कर देती थी।

प्रश्न 3. बचेंद्री पाल ने अपनी शिक्षा कैसे प्राप्त की ?

उत्तर : बचेंद्री पाल दिन के समय केवल अपने हिस्से का ही नहीं बल्कि कहीं अधिक काम करती थी। वह अपने मित्रों से किताबें उधार लेकर देर रात तक पढ़ती थी। उसने सिलाई-कढ़ाई का काम करके अपनी पढ़ाई का खर्च उठाया।

प्रश्न 4. बचेंद्री पाल ने नेहरू संस्थान के पर्वतारोही कोर्स में क्या-क्या सीखा ?

उत्तर : बचेंद्री पाल ने नेहरू संस्थान के पर्वतारोही कोर्स में बर्फ और चट्टानों पर चढ़ने के तरीके सीखे। रैपलिंग करना सीखा। अभियान को आयोजित करने का प्रशिक्षण भी लिया।

प्रश्न 5. तेनजिंग ने बचेंद्री पाल की तारीफ में क्या कहा ?

उत्तर : तेनजिंग ने बचेंद्री पाल की तारीफ में कहा कि तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।

प्रश्न 6.एवरेस्ट पर पहुँच कर बचेंद्री पाल ने घुटनों के बल बैठ कर क्या किया ?

उत्तर : एवरेस्ट पर पहुँच कर बचेंद्री पाल ने घुटनों के बल बैठकर बर्फ पर अपना माथा लगाया और सागर माथे के ताज का चुंबन लिया। थैले से दुर्गा माँ का चित्र तथा हनुमान चालीसा निकाला। उन्हें लाल कपड़े में लपेटकर छोटी सी पूजा की तथा बर्फ में दबा दिया।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ: पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. बचेंद्री पाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : बचेंद्री पाल का जन्म उत्तरांचल के चमौली जिले में बंपा गाँव में 24 मई, सन् 1954 ई० को हुआ। इनकी माता का नाम हंसादेई नेगी तथा पिता का नाम किशन सिंह पाल है। वह बचपन से ही निडर तथा साहसी थी। वह बहुत बड़ी स्वप्न दृष्टा थी। वह दृढ़ निश्चयी थी। उसने बचपन में ही अपने परिवार में किसी से पीछे न रहने का निश्चय कर लिया था। उसने एवरेस्ट पर चढ़ने का सपना देखा और कठिन परिश्रम से उसे पूरा किया। वह प्रतियोगिता में पूरे परिश्रम से भाग लेती थी।

प्रश्न 2. बचेंद्री पाल के एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने का वर्णन कीजिए।

उत्तर : बचेंद्री पाल ने 1 मई, सन् 1984 तक एवरेस्ट पर जाने की योजना की सही तैयारी कर ली थी। 8 मई को साउथ पोल पहुँच कर 9 मई को चोटी पर पहुँचने का प्रयास करना था। उसने 9 मई को प्रातः सात बजे शिखर कैंप से प्रस्थान किया। 16 मई प्रातः 8 बजे तक दूसरे कैंप में पहुँच गई। अगली सुबह 6:20 पर उसने अंग दोरजी के साथ बिना रस्सी के चढ़ाई शुरू की। उन्होंने चट्टानों पर चढ़ते हुए बर्फ को काटने के लिए फावड़े का प्रयोग किया। वे दो घंटे से पहले ही शिखर के कैंप पर पहुँच गए। इस प्रकार निरंतर बढ़ते हुए वह 23 मई, सन् 1984 को एवरेस्ट चोटी पर पहुँच गई।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :-

एकवचन	-	बहुवचन	एकवचन	-	बहुवचन
किताब	-	किताबें	लड़की	-	लड़कियाँ
क़मीज़	-	कमीज़ें	मटका	-	मटके
चट्टान	-	चट्टानें	धागा	-	धागे
तकनीक	-	तकनीकें	परीक्षा	-	परीक्षाएँ
चादर	-	चादरें	इच्छा	-	इच्छाएँ
साँस	-	साँसें	श्रेणी	-	श्रेणियाँ

2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए :-

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
प्रवासी	प्र	वासी	परिवार	परि	वार

प्रशिक्षण	प्र	शिक्षण		परिश्रम	परि	श्रम	
प्रशिक्षक	प्र	शिक्षक		अभियान	अभि	यान	

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए:-

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
पढ़ाई	पढ़	आई	बचपन	बच्चा	पन
ऊँचाई	ऊँचा	आई	सफलता	सफल	ता
चढ़ाई	चढ़	आई	कठिनाई	कठिन	आई
न्यूनतम	न्यून	तम	सुरक्षित	सुरक्षा	इत

पाठ 17 कैसे बचें उपभोक्ता धोखाधड़ी से

(क) विषय बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए –

(i) उत्पादक किस तरह ग्राहकों को प्रभावित करते हैं?

उत्तर- उत्पादक लुभावने विज्ञापनों द्वारा ग्राहकों को प्रभावित करते हैं। कई बार उत्पादक ग्राहकों को उत्पाद के बारे में ग़लत जानकारी देकर भी प्रभावित करते हैं।

(ii) उपभोक्ताओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए सरकार ने 1986 में कौन सा कानून लागू किया?

उत्तर- उपभोक्ताओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए सरकार ने 1986 में उपभोक्ता संरक्षण कानून लागू किया ।

(iii) ग्राहकों को किस तरह अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाता है?

उत्तर- ग्राहकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए रेडियो व टेलीविज़न पर विज्ञापन दिखाए जाते हैं अथवा सुनाए जाते हैं।

(iv) कितने रुपए तक के क्लेम के लिए उपभोक्ता जिला स्तर पर न्याय की गुहार लगा सकता है?

उत्तर- उपभोक्ता 20 लाख तक के क्लेम के लिए ज़िला स्तर पर गुहार लगा सकता है।

(v) 20 लाख रुपए से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ता को अपनी शिकायत कहाँ दर्ज करवानी चाहिए?

उत्तर- 20 लाख रुपए से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ताओं को अपनी शिकायत राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग में दर्ज करवानी चाहिए।

(vi) एक करोड़ रुपए से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ता को अपनी शिकायत कहाँ दर्ज करवानी चाहिए?

उत्तर - एक करोड़ रुपए से अधिक के क्लेम के लिए उपभोक्ता को अपनी शिकायत राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण आयोग में दर्ज करवानी चाहिए।

(vii) उपभोक्ता को अपने अधिकारों के हनन की शिकायत कितने वर्षों के भीतर करनी चाहिए?

उत्तर- उपभोक्ता को अपने अधिकारों के हनन की शिकायत दो वर्ष के भीतर करनी चाहिए।

(viii) क्या ग़रीबी रेखा से नीचे के कार्ड धारक उपभोक्ता को शिकायत दर्ज करवाने के लिए फीस अदा करनी पड़ती है?

उत्तर- बी .पी .एल. कार्ड धारक या ग़रीबी रेखा से नीचे के कार्ड धारक उपभोक्ता को शिकायत दर्ज करवाने के लिए कोई फीस अदा नहीं करनी पड़ती ।

(ix) उपभोक्ता अधिकांश तौर पर सामान खरीदते समय बिल क्यों नहीं लेते ?

उत्तर- अधिकांश उपभोक्ता वैट टैक्स से बचने के लिए सामान खरीदते समय बिल नहीं लेते और उनके पास खरीदी गई वस्तु का प्रमाण न होने के कारण शिकायत करने की दिशा में वे आगे नहीं बढ़ पाते ।

(x) नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन नंबर क्या है?

उत्तर- नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन नंबर 1800114000 है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए –

(i) उपभोक्ता किसे कहते हैं?

उत्तर- वह हर एक व्यक्ति उपभोक्ता होता है जो किसी वस्तु या सेवा को पाने के बदले में धन का भुगतान करता है। जिसे सुरक्षा का, जानकारी होने का, उत्पाद चुनने का, सुनवाई का और शिकायत निवारण आदि का अधिकार प्राप्त होता है, वह उपभोक्ता होता है ।

(ii) उपभोक्ता संरक्षण कानून 1986 के अनुसार उपभोक्ता के कौन-कौन से अधिकार हैं?

उत्तर- उपभोक्ता संरक्षण कानून 1986 के अनुसार उपभोक्ता के पास निम्नलिखित अधिकार हैं-

(1) सुरक्षा का अधिकार

(2) जानकारी होने का अधिकार

(3) उत्पाद चुनने का अधिकार

(4) सुनवाई का अधिकार

(5) शिकायत निवारण का अधिकार

(6) उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार।

(iii) उपभोक्ता से यदि नियत की गई कीमत से ज़्यादा कीमत वसूली जाती है तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर - उपभोक्ता से यदि नियत की गई कीमत से ज़्यादा कीमत वसूली जाती है तो उसे उपभोक्ता संरक्षण आयोग में कीमत अधिक वसूलने वाले के खिलाफ शिकायत दर्ज करवानी चाहिए।

(iv) उपभोक्ता अपनी शिकायत ऑनलाइन किस तरह दर्ज करवा सकता है?

उत्तर - उपभोक्ता अगर चाहे तो इंटरनेट के जरिए कोर सेंटर में भी शिकायत दर्ज कर सकता है। उपभोक्ता अपनी शिकायत इंटरनेट के जरिए www.core.nic.in पर लौगइन करके कम्प्लेंट रजिस्ट्रेशन पर एक क्लिक द्वारा अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है और उसे ऑनलाइन शिकायत क्रमांक प्राप्त हो जाता है। 72 घंटों के भीतर ही आगे की कार्यवाई शुरू हो जाती है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6 या 7 पंक्तियों में दीजिए –

(i) आयोग के पास उपभोक्ता के अधिकारों के उल्लंघन के किस- किस तरह के मामले आते हैं?

उत्तर - उपभोक्ता संरक्षण आयोग के पास उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन के अनेक प्रकार के मामले सामने आते हैं। जैसे –

1.) एक एक फ्लैट को दो -दो बार आबंटित करने के मामले ।

2.) बैंकों की शिकायत के मामले जो ग्राहकों के बैंक अकाउंट बिना किसी वजह के फ्रीज़ कर देते हैं।

3.) अधिक कीमत पर माल बेचने संबंधी मामले ।

4.) कम्पनियों की आकर्षक ब्याज दर या कुछ समय में धन दोगुना करने की स्कीम के विज्ञापनों के विरुद्ध।

(ii) उपभोक्ता को सामान खरीदते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- उपभोक्ता को सामान खरीदते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए ताकि वह हर प्रकार की धोखाधड़ी से बच सके –-

1.) उपभोक्ता केवल वही सामान खरीदें, जिस पर एगमार्क का 'लोगो ' लगा हुआ हो ।

2.) उत्पाद खरीदते समय उत्पाद पर बैच नंबर या लौट नंबर भी अवश्य जाँच लेना चाहिए।

3.) पैकिंग की तारीख, उत्पाद का वज़न, किस तारीख से पहले प्रयोग उचित रहेगा आदि अवश्य देख लेने चाहिए।

4.) उपभोक्ता को खरीदे गए सामान का बिल ज़रूर लेना चाहिए।

5.) उत्पाद के साथ मिलने वाले गारंटी / वारंटी कार्ड पर दुकानदार के हस्ताक्षर ज़रूर लेने चाहिएँ ।

6.) उत्पाद खरीदते समय यह जाँच लेना चाहिए कि पैकेट खुले या फटे न हों ।

7.) उत्पादक का नाम भी अवश्य पढ़ लेना चाहिए।

(ख) भाषा - बोध

(i) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
दूकान	दुकान	गराहक	ग्राहक
व्यकती	व्यक्ति	विग्यापन	विज्ञापन
नाममातर	नाममात्र	पीड़त	पीड़ित
अरोप	आरोप	उलंघन	उल्लंघन

(ii) निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए-

शब्द	**वर्ण विच्छेद**	**शब्द**	**वर्ण विच्छेद**
उपभोक्ता	उ+प्+अ+भ्+ओ+क्+त्+आ	चिकित्सक	च्+इ+क्+इ+त्+स्+अ+क्+अ
विज्ञापन	व्+इ+ज्+ञ्+आ+प्+अ+न्+अ	शिकायत	श्+इ+क्+आ+य्+अ+त्+अ
ग्राहक	ग्+र्+आ+ह्+अ+क्+अ	उत्पादक	उ+त्+प्+आ+द्+अ+क्+अ
आकर्षक	आ+क्+अ+र्+ष्+अ+क्+अ		

पाठ 18 शिवाजी का सच्चा स्वरूप

(क) विषय बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दें-

(i) शिवाजी कौन थे?

उत्तर- शिवाजी एक प्रसिद्ध मराठा वीर थे। उन्होंने मुग़लों के खिलाफ़ कई युद्ध लड़े थे।

(ii) मोरोपंत कौन था ?

उत्तर- मोरोपंत शिवा जी के राज्य में एक मुख्य सरदार था ।

(iii) आवाजी सोनदेव कौन था ?

उत्तर- आवाजी सोनदेव शिवाजी का एक सेनापति था ।

(iv) शिवा जी के सच्चे स्वरूप को दर्शाती इस पाठ की घटना किस समय की है?

उत्तर- शिवाजी के सच्चे स्वरूप को दर्शाती इस पाठ की घटना सन् 1648 ई० की है।

(v) मोरोपंत शिवाजी को आकर क्या शुभ समाचार देता है?

उत्तर- मोरोपंत शिवाजी के पास आकर यह शुभ समाचार देता है कि उनके सेनापतियों ने कल्याण प्रांत को जीत लिया है और वहाँ का ख़जाना लूट कर ले आए हैं।

(vi) आवाजी सोनदेव ने शिवा जी को सबसे बड़े तोहफ़े के बारे में क्या बताया ?

उत्तर- आवाजी सोनदेव ने बताया कि वे कल्याण के सूबेदार अहमद की सुंदर पुत्र वधू को उठा कर ले आए हैं।

(vii) शिवाजी की प्रसन्नता एकाएक लुप्त क्यों हो गई?

उत्तर- शिवाजी पर स्त्री को माँ के समान समझते थे लेकिन उनके सूबेदार अहमद की पुत्र वधू को उठा कर ले आए थे यह देखकर उनकी प्रसन्नता एकाएक लुप्त हो गई।

(viii) शिवाजी ने सूबेदार की पुत्र-वधू की सुरक्षा करते हुए क्या आश्वासन दिया?

उत्तर- शिवाजी ने सूबेदार की पुत्र-वधू को सुरक्षा प्रदान करते हुए यह आश्वासन दिया कि उन्हें पूरी इज़्ज़त और हिफ़ाज़त के साथ उनके पति के पास पहुँचा दिया जाएगा ।

(ix) शिवाजी पर-स्त्री को किसके समान मानते थे?

उत्तर- शिवाजी पर-स्त्री को माँ के समान समझते थे। वे सभी स्त्रियों का आदर करते थे।

(x) शिवाजी ने अंत में क्या घोषणा की ?

उत्तर- शिवाजी ने घोषणा की कि यदि भविष्य में कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर उसी समय धड़ से अलग कर दिया जाएगा ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन चार पंक्तियों में दीजिए-

(I) शिवाजी ने अपने सेनापति की ग़लती पर सूबेदार की पुत्र-वधू से किस प्रकार मुआफ़ी माँगी?

उत्तर- अहमद की पुत्रवधू को सम्मान सहित संबोधन करते हुए शिवाजी ने कहा कि उनके सेनापति ने बहुत बड़ी ग़लती की है। सेनापति के इस घृणित कार्य के लिए उनसे **मुआफ़ी** माँगी और उन्हें आश्वासन दिलाया कि उन्हें उनके पति के पास पूरी इज़्ज़त और हिफ़ाज़त के साथ भेज दिया जाएगा ।

(ii) शिवा जी ने अपने सेनापति को किस प्रकार डाँट फटकार लगाई?

उत्तर- शिवाजी ने अपने सेनापति को डाँट फटकार लगाते हुए कहा कि तुमने बहुत ही घृणित कार्य किया है जिसके लिए तुम्हें कभी भी माफ़ नहीं कि या जा सकता। उन्होंने यह भी कहा कि यदि भविष्य में कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा ।

(iii) शिवाजी किस तरह के सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे?

उत्तर- शिवाजी हर धर्म को समान समझते थे। वे ऊँच-नीच या बड़े-छोटे में भेदभाव नहीं करते थे। वे चाहते थे कि एक ऐसे स्वराज्य की स्थापना की जाए जिसमें सभी बराबर हों। सभी सुख-शांति और भाईचारे के साथ रहें। वे चाहते थे कि पर-स्त्रियों को माँ के समान समझा जाए और उन्हें विशेष सम्मान दिया जाए।

(iv) शिवाजी शील अर्थात सच्चरित्र को जीवन का आवश्यक अंग क्यों मानते थे?

उत्तर- शिवाजी शील अर्थात सच्चरित्र को जीवन का आवश्यक अंग इसलिए मानते थे क्योंकि उनका मानना था कि एक अच्छा चरित्र ही जीवन का मूल आधार होता है। अच्छे चरित्र से ही व्यक्ति का जीवन महान बनता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 6 या 7 पंक्तियों में दीजिए -

(i) "शिवाजी का सच्चा स्वरूप" पाठ के आधार पर शिवाजी का चरित्र चित्रण कीजिए?

उत्तर- शिवाजी एक मराठा वीर थे। उन्होंने मुग़लों के खिलाफ़ कई युद्ध लड़े तथा अनेक किलों का निर्माण करवाया । शिवाजी अपने सैनिकों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। जब उनके सैनिक कल्याण प्रांत जीतकर लौटे तो वे पैदल चल कर उनका हाल चाल पूछने के लिए गए। शिवाजी हिंदू और मुसलमान में कोई फर्क नहीं समझते थे। वे एक सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे। शिवाजी अच्छे चरित्र वाले थे। वे सभी स्त्रियों का सम्मान करते थे। वे पर-स्त्री को माँ के समान मानते थे।

स्त्रियों की इज्ज़त न करने वालों को वह घृणा की दृष्टि से देखते थे और उन्हें किसी भी प्रकार के घृणित कार्य के लिए दंड भी दिया जाता था । इस प्रकार शिवाजी अच्छे चरित्र की एक बेजोड़ उदाहरण हैं ।

(ii) इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- सेठ गोविंद दास की एकांकी 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' से यह शिक्षा मिलती है कि यदि एक राज्य में सच्चा स्वराज्य हो तो ही प्रजा का कल्याण हो सकता है। किसी भी व्यक्ति को भले ही वह बड़े से बड़े पद का अधिकारी हो , कोई भी नीच या घृणित कार्य नहीं करना चाहिए। पर स्त्रियों को मां के समान समझना चाहिए। उनका आदर सम्मान करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति स्त्रियों का सम्मान न करे या कोई और घृणित कार्य करें तो उसे दंड दिया जाना चाहिए। किसी भी धर्म से नफ़रत नहीं करनी चाहिए। सभी धर्मों को एक समान समझना चाहिए। हर मनुष्य को अपनी सामाजिक व नैतिक ज़िम्मेदारियों व मूल्यों को ध्यान में रखते हुए अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए।

(iii). शिवाजी का सच्चा स्वरूप एकांकी के नाम की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- सेठ गोविंद दास जी की एकांकी "शिवाजी का सच्चा स्वरूप" का नाम सार्थक सिद्ध होता है क्योंकि उन्होंने इसमें शुरू से लेकर अंत तक शिवाजी के चरित्र और उनके सच्चे स्वरूप का ही वर्णन करने का प्रयत्न किया है। शिवाजी के शौर्य तथा पराक्रम का बहुत ही सुंदर चित्रण एकांकी में किया गया है। देश की शक्तियों को इकट्ठा कर एक नए स्वराज्य की स्थापना किस प्रकार की जाए, यह भी एकांकी में दर्शाया गया है। वे अपराजेय शक्ति, शौर्य और पराक्रम का साक्षात रूप थे। विदेशी शासकों के अत्याचारों से उन्होंने निरंतर लोहा लिया। उनका साम्राज्य मानव मूल्यों की आधारशिला पर टिका हुआ था। शिवाजी शीलवान और चरित्रवान पुरुष थे। उनका मानना था कि शिवा में शील (चरित्र) होना आवश्यक था क्योंकि उनमें शील होने पर ही सेनापति और सरदारों में भी शील हो सकता है। बिना चरित्र के लुटेरों , डाकुओं और उनमें कोई अंतर नहीं रहता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एकांकी का यह नाम बिल्कुल सार्थक है।

(iv). निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) आवाजी , तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे। इसलिए तो तुमने यह कार्य नहीं किया ?

उत्तर- ये पंक्तियाँ शिवाजी ने अपने सेना पति आवाजी सोनदेव से तब कहीं जब वह कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्रवधू को एक पालकी में लेकर आए। शिवाजी उनके इस प्रकार के काम से बहुत दु:खी हुए और उसे डाँटने लगे कि उसने ऐसा घृणित कार्य क्यों किया है। शिवाजी उसे कहते हैं कि इस कार्य के लिए उसे कभी भी माफ़ नहीं किया जा सकता । शिवाजी कहते हैं कि क्या उसने इस घृणित कार्य को उसकी परीक्षा लेने के लिए तो नहीं किया । उसने यह सोचकर ऐसा किया होगा उनके इस बुरे काम पर विश्वास ही नहीं हो रहा था ।

(ख) पेशवा , यह... मेरे.... मेरे एक सेनापति ने..... मेरे एक सेनापति ने क्या.... क्या कर डाला । लज्जा से मेरा सिर आज पृथ्वी में नहीं, पाताल में घुसा जाता है। इस पाप का ना जाने मुझे कैसा.... कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा ?

उत्तर- ये पंक्तियाँ शिवाजी ने मोरोपंत से बहुत दु:खी होते हुए उस समय कहीं जब आवाजी सोनदेव कल्याण की पुत्र-वधू को उठा कर भेंट के रूप में शिवाजी के लिए ले आए। शिवाजी को इस घृणित कार्य के फल स्वरुप अपने क्षोभ की अभिव्यक्ति करने में बड़ी कठिनाई होती है। इस बात पर विश्वास नहीं होता कि ऐसा बुरा काम उनके ही सेना पति ने किया है इसके लिए शिवाजी को लज्जा आती है और उनका सिर शर्म से झुक जाता है और वह प्रायश्चित करते हुए कहते हैं कि आज उनका सिर धरती में नहीं पाताल में भी घुस जाए तो भी वह सैनिकों के इस घृणित कार्य से मुक्त नहीं हो पाएँगे ।

(ख) भाषा बोध

(i) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखें

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दलान	दालान	सेनापती	सेनापति
सुसजित	सुसज्जित	उपसथित	उपस्थित
वेषभूशा	वेशभूषा	मुसकुराना	मुस्कुराना
गबराहट	घबराहट	खुबसूरती	खूबसूरती
हिंदु	हिंदू	सुराजय	स्वराज्य
मसजिद	मस्जिद	घृणीत	घृणित
श्रेसकर	श्रेयस्कर	प्राशचित	प्रायश्चित

(ii). निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) भृकुटि चढ़ाना (गुस्सा आ जाना) सेनापति के घृणित कार्य को देखकर शिवाजी की भृकुटी चढ़ गई।

(ख) (नीचे का) होंठ (ऊपर के) दाँतो के नीचे आना (बहुत गुस्सा आ जाना) माता जी का अपमान होते हुए देख राधा का होंठ दातों के नीचे आना स्वभाविक था ।

(ग) सिर पर चढ़ाना (आदर सम्मान करना) रमेश अपने घर में लाडला है। इसलिए सभी ने उसे सिर पर चढ़ा रखा है।

(घ) बाल बराबर दरार न आने देना (थोड़ा -सा भी नुकसान न होने देना) मुसीबत के समय एक माँ अपने बच्चों पर बाल बराबर दरार नहीं आने देती ।

पाठ 19 प्रकृति का अभिशाप

(क) विषय-बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :-

प्रश्न 1. सूर्यदेव को किस ग्रह की चिंता थी ?

उत्तर : सूर्यदेव को पृथ्वी ग्रह की चिंता थी।

प्रश्न 2. जलदेवी के अनुसार पृथ्वी के वातावरण को कौन विषाक्त बना रहा है?

उत्तर : जलदेवी के अनुसार पृथ्वी के वातावरण को प्रदूषण विषाक्त बना रहा है।

प्रश्न 3. पवनदेव ने ऑक्सीजन कम होने का क्या कारण बताया ?

उत्तर : कारखानों, इंजनों में आग का प्रयोग होने से ऑक्सीजन कम हो रही है।

प्रश्न 4. वनदेवी ने अपने घटने का क्या कारण बताया ?

उत्तर : वनदेवी ने अपने घटने का कारण कार्बन-डाइऑक्साइड को बताया।

प्रश्न 5. गंधकयुक्त औषधियाँ मनुष्य के स्वास्थ्य पर क्या प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं?

उत्तर : गंधकयुक्त औषधियाँ मनुष्य में आँतों की बीमारियाँ उत्पन्न करती हैं। तपेदिक जैसे रोगों को बढ़ावा देती हैं।

प्रश्न 6. ओज़ोन परत क्या है ?

उत्तर : जो परत सूर्य द्वारा विसर्जित पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से पृथ्वी के जीवों की रक्षा करती है उसे ओज़ोन परत कहते हैं।

प्रश्न 7. ओज़ोन की परत को कौन नष्ट कर रहा है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर :वायुमंडल में पेट्रोल से चलने वाले जैट जैसे बड़े-बड़े हवाई जहाज ओज़ोन की परत को नष्ट कर रहे हैं।

प्रश्न 8. प्रदूषण से मुक्ति दिलाने की बात किसने सूर्यदेव से की ?

उत्तर : प्रदूषण से मुक्ति दिलाने की बात बुद्धिदेवी ने सूर्यदेव से की।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए

प्रश्न 1. यदि वायुमंडल न होता तो पृथ्वी का क्या हाल होता ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : यदि वायुमंडल न होता तो पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं होता। पृथ्वी पर प्राणी जीवित नहीं रह पाते। पृथ्वी पर अनेक संकट आ जाते। अतंरिक्ष की उलकाएँ पृथ्वी पर विनाश कर देतीं। पृथ्वी का धरातल भी चंद्रमा के समान बड़े बड़े गड्ढों में बदल जाता।

प्रश्न 2. वनदेवी ने हरी पत्तियों को 'ऑक्सीजन का कारखाना' क्यों कहा ?

उत्तर : वनदेवी ने हरी पत्तियों को ऑक्सीजन का कारखाना इसलिए कहा है क्योंकि हरी पत्तियां भोजन और ऑक्सीजन बनाती हैं। इस कारखाने में कभी कोई हड़ताल नहीं होती। ये प्रकाश-संश्लेषण क्रिया से कार्बन-डाइऑक्साइड को कार्बन और ऑक्सीजन में विश्लेषित करती हैं और कार्बन स्वयं शोषित कर ऑक्सीजन को वायु में छोड़ देती हैं।

प्रश्न 3. वनदेवी ने गुस्से में आकर रश्मिदेवी को क्या कहा ?

उत्तर : वनदेवी ने रश्मिदेवी को गुस्से में आकर कहा कि मानव की आधुनिक प्रगति और औद्योगिक वृद्धि के कारण हरे-भरे जंगल नष्ट हो रहे हैं। विवेकहीन मनुष्य जंगलों को अंधाधुध काट रहा है। इससे वायु को शुद्ध करने की मेरी क्षमता नष्ट हो रही है। प्रदूषण बढ़ रहा है।

प्रश्न 4. वन किस प्रकार हमारे लिए लाभकारी हैं ?

उत्तर : वन हमारे लिए बहुत लाभकारी हैं। वनों से हमें शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है। वन वर्षा लाने में सहायक हैं। इससे अनेक उपयोगी वनस्पतियाँ और औषधियां मिलती हैं।

प्रश्न 5. रेडियोधर्मिता क्या है ? मनुष्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर : परमाणु-परीक्षण के लिए जिन यूरेनियम जैसे तत्वों को प्रयोग करने से हानिकारक प्रभाव वायुमंडल में फैलते हैं उसे रेडियोधर्मिता कहते हैं। मनुष्य पर उसका अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मानव भयंकर बीमारियों से पीड़ित हो जाता है। उसके कुप्रभाव से अगली पीढ़ी को तो पहचानना भी संभव नहीं रह सकेगा।

प्रश्न 6. बुद्धिदेवी ने मानव-रक्षा के लिए सूर्यदेव को क्या भरोसा दिलाया ?

उत्तर : बुद्धिदेवी ने मानव रक्षा के लिए सूर्यदेव को यह भरोसा दिलाया कि वह मानव-कल्याण का कार्य करेगी। वह प्रदूषण दैत्य को जड़ से समाप्त कर देगी जैसे आदि मानव विनाशकारी अग्नि से डर गया था। किंतु उसने इसी अग्नि को अपने अधीन कर लिया। आज अग्नि मानव के लिए बड़ी देन है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छः या सात पंक्तियों में दीजिए

प्रश्न1. लेखक ने प्रदूषण को महादैत्य कहा है। आप लेखक की बात से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मैं लेखक की बात से पूरी तरह से सहमत हूँ क्योंकि प्रदूषण ने वातावरण को इतना दूषित कर दिया है कि आज प्राणियों का साँस लेना भी कठिन हो रहा है। आज पृथ्वी ग्रह पर जीवन संकटों से भरा है। वायु भी दूषित हो गई है जिससे प्राणी साँस भी नहीं ले पा रहा। आज प्रदूषण ने सारी पृथ्वी पर कब्जा कर लिया है।

प्रश्न 2. जल, वायु और ध्वनि-प्रदूषण हमारे लिए बहुत ही घातक हैं-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण हमारे लिए बहुत ही घातक हैं। इनसे अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। जल प्रदूषण से हैजा, पेचिश जैसी बीमारियाँ होती हैं। वायु प्रदूषण से दमा, खाँसी तथा साँस के अन्य रोग होते हैं। ध्वनि प्रदूषण से हृदय रोग, फेफड़ों के अनेक रोग फैल रहे हैं।

प्रश्न 3.निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. यह दैत्य ऐसा ही है जो दिखाई नहीं देता परंतु धीरे-धीरे पृथ्वी के वातावरण को विषाक्त बना रहा है।

उत्तर : इस कथन का आशय है कि वर्तमान समय में चारों तरफ प्रदूषण फैलता जा रहा है। यह एक राक्षस की तरह फैल रहा है। यह एक ऐसा राक्षस है जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता परंतु धीरे-धीरे इसके प्रभाव से वातावरण ज़हरीला बन रहा है। प्रदूषण के कारण वातावरण प्रदूषित हो रहा है जो अनेक बीमारियों का कारण है।

2. मैं हूँ मानव का महाकाल, प्रगति का अभिशाप, औद्योगिक प्रगति का विष-वृक्ष, मैं हूँ मानव का अदृश्य शत्रु-प्रदूषण दैत्य। समझे...प्रदूषण दैत्य।

उत्तर : आज प्रदूषण एक राक्षस के समान चारों तरफ फैल रहा है। वह अत्यंत भयानक एवं खतरनाक है। वह वनदेवी को अपने खतरे को बताते हुए कहता है कि मैं मानव का महाकाल हूँ। अर्थात् मैं मनुष्य को मारने वाला हूँ। मैं प्रगति के रास्ते में बाधक हूँ। मैं औद्योगिक प्रगति को नष्ट करने वाला हूँ। मैं मानव का अदृश्य शत्रु हूँ अर्थात् मैं मानव-जाति के लिए विनाशकारी और प्रगति के लिए अभिशाप हूँ। मैं औद्योगिक विकास का विष वृक्ष हूँ। सबको निरंतर नष्ट कर रहा हूँ।

3. आप लोग चिंता न करें, मुझ पर भरोसा रखें। आदि मानव विनाशकारी अग्नि से भयभीत हो गया था। फिर उसने इसी अग्नि को अपने अधीन कर लिया और आज अग्नि मानव के लिए बड़ी देन है। मैं इस प्रदूषण दैत्य को ही जड़ से समाप्त कर दूँगी। संसार में इसका उन्मूलन करना परमावश्यक है।

उत्तर : बुद्धिदेवी मानव कल्याण के लिए सूर्यदेव को आश्वासन देती है। वह कहती है कि मानव कल्याण के लिए आप चिंता न करें। इसके लिए आप मुझ पर भरोसा रखें। जैसे आदि मानव विनाशकारी अग्नि से डर गया था किंतु बाद में उसने अग्नि को अपने अधीन कर लिया इसलिए आज अग्नि मानव के लिए कल्याणकारी है। इसी तरह मैं इस प्रदूषण रूपी राक्षस को जड़ से खत्म कर दूंगी। आज संसार में इसको मिटाना बहुत ज़रूरी है।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित एक-वचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

एकवचन	-	बहुवचन	एकवचन	-	बहुवचन
पत्ता	-	पत्ते	नज़र	-	नज़रें
पुत्री	-	पुत्रियाँ	गड्ढा	-	गड्ढे
आँत	-	आँतें	पृथ्वी	-	पृथ्वियाँ
बहरा	-	बहरे	किरण	-	किरणें
साड़ी	-	साड़ियाँ	पीला	-	पीले
परत	-	परतें	लकड़ी	-	लकड़ियाँ
नीला	-	नीले	गैस	-	गैसें
पत्ती	-	पत्तियाँ	देवी	-	देवियाँ

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए:-

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
उन्नति	उत्	नति	आगमन	आ	गमन
असत्य	अ	सत्य	प्रदूषण	प्र	दूषण
प्रगति	प्र	गति	अत्यधिक	अति	अधिक
प्रत्येक	प्रति	एक	दुष्प्रभाव	दुः	प्रभाव

3. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए।

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय

प्रसन्नता	प्रसन्न	ता	तीव्रता	तीव्र	ता
उपयोगी	उपयोग	ई	विषैला	विष	ऐला
उपहार	उप	हा	ज़हरीला	ज़हर	इला

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
• **चारा न रहना**	(उपाय न होना)	समय बीत जाने पर हमारे पास कार्य सिद्धि का कोई चारा नहीं रहता।
• **गज़ब ढाना**	(जुल्म करना)	अंग्रेजों ने भारतीयों पर बहुत गज़ब ढाए।
• **नाक में दम करना**	(तंग करना)	शरारती बच्चों ने सबकी नाक में दम कर दिया
• **घुला घुला कर मारना**	(धीरे-धीरे कष्ट पहुँचाकर मारना)	डाकुओं ने यात्री को घुला-घुला कर मार डाला।
• **लोहा लेना**	(युद्ध करना)	शिवाजी ने विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लिया।
• **तिनके के समान**	(बहुत कमज़ोर)	डरपोक लोग विपत्ति काल में तिनके के समान होते हैं।

5. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए

तद्भव	**-**	**तत्सम**	**तद्भव**	**-**	**तत्सम**
सफेद	-	शुभ्र/श्वेत	सूरज	-	सूर्य
पीला	-	पीत	करोड़	-	कोटि
चाँद	-	चंद्र	समुन्दर	-	समुद्र

6. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए

i) वह है मेरी प्रिय पुत्री पृथ्वी

उत्तर : वह है मेरी प्रिय पुत्री-पृथ्वी।

ii) कौन रश्मि तुम मेरी बातें सुन रही थीं

उत्तर : कौन? रश्मि! तुम मेरी बातें सुन रही थीं?

iii) हाँ तुमने ठीक पहचाना

उत्तर : हाँ! तुमने ठीक पहचाना।

iv) सिंहासन से उठकर आखिर बात क्या है

उत्तर : सिंहासन से उठकर- आखिर बात क्या है?

v) मुझे आशीर्वाद दीजिए शक्ति दीजिए कि मैं लोग कल्याण के इस कार्य को करने में सफल होऊँ

उत्तर : मुझे आशीर्वाद दीजिए, शक्ति दीजिए कि मैं लोग-कल्याण के इस कार्य को करने में सफल होऊँ।

मार्गदर्शक

- **डॉ॰ राजन एस.आर.पी. हिंदी पंजाब**

तैयार कर्त्ता:

- **अनवर हुसैन, हिंदी अध्यापक, स.मि. स्कूल, चणों , फतेहगढ़ साहिब**
- **दीपक कुमार, हिंदी अध्यापक, स.मि. स्कूल शेरगढ़, बठिंडा**